हिन्दू चेतना (पाक्षिक)
E-mail:hinduchetna.patrika@gmail.com
युगाब्द 5120 | हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दूः पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दुरक्षा मम मंत्रः समानता।। | 2075 वि.सं.

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
श्रीमद्भगवद्गीता	3
दिन दर्शिका	4
स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर	5
गंगा दशहरा	7
CJI पर महाभियोग मामले में सुप्रीम कोर्ट में हुआ हाई वोल्टेज ड्रामा, कांग्रेस ने वापस ली याचिका	8
महाभियोग पर तमाशा	9
कीर्तन भक्ति का प्रताप	10
पत्रकारिता के दार्शनिक आयाम का आधार है 'आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन'	12
अयोध्या की परिक्रमा यात्रा	15
''राष्ट्र की एकता और अखंडता'' के लिये ''जम्मू बचाओ कश्मीर बचाओ''	16
सांस्कृतिक एकता की आध्यात्मिक यात्रा	17
भारतीय शास्त्रों में भारत व उसका गुणगान	19
भगवान सदाशिव के विविध अवतार	22
न्याय के देव-शनिदेव	24
लोकतंत्र सेनानियों ने व्यवस्था परिवर्तन पर दिया जोर कहा-लोकनायक का स्वप्न साकार नहीं हुआ	25

अथैकादशोऽध्यायः

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परन्तप ।।५४।।

परन्तु हे शत्रुओं को तपाने वाले अर्जुन! अनन्य भक्ति द्वारा इस प्रकार चतुर्भुजरूपवाला मैं प्रत्यक्ष देखा जा सकता हूँ, तत्त्व से जाना जा सकता हूँ और एकीभाव से प्राप्त किया जा सकता हूँ।

यज्ञ तपस्या और दान से-वेद शास्त्र के विशद् ज्ञान से वर्णाश्रम इत्यादि धर्म से-अन्य अनेक विभिन्न कर्म से सुनो शत्रुपातन है अर्जुन-रूप चतुर्भुज का यूँ दर्शन सम्भव नहीं विभिन्न युक्ति से-सम्भव किन्तु अनन्य भक्ति से

दोहा

मेरा ही आश्रम तथा, मुझमें दृढ़ विश्वास।
साधक को निज साधना, से जब कछु नहिं आस।।
शिषु नवजात समान जब, सकल साधना हीन।
अपनी बुद्धि समर्पित, करे मुझे मन दीन ।।

यही अनन्य भक्ति कहलाती-अंतःकरण विशुद्ध बनाती यही भक्ति मम तत्त्व ज्ञानदा-मैं ही हूँ सर्वत्र सर्वदा मुझसे अभिन्नता का अनुभव-इसी भक्ति से यह भी संभव दर्शन दात्री सगुण रूप के-विष्णु राम श्रीकृष्ण आदि के मेरे दर्शन की व्याकुलता-जब आँखों से अश्रु निकलता किंचित साधन का न सहारा-पूर्णतया असहाय बेचारा साधन का अभिमान मिटे जब-मेरी कृपा प्राप्त होती तब मेरी कृपा में न कुछ बाधक-मुझे प्राप्त होता वह साधक

सुगम गीता व्याख्या पुस्तक से
लेखक - **श्री प्यारेलाल त्रिवेदी**
सी-2/53ए, लॉरेंस रोड, केशवपुरम्, दिल्ली-110035

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष (अधिक) विक्रम संवत् २०७५
१६ मई से ३१ मई २०१८ ई. तक

सूर्य उत्तरायण — वसन्त ऋतु

दिन	तिथि	नक्षत्र	प्रविष्टि सौर मास	दिनांक आंग्लमास	विशेष विवरण
बुधवार	प्रतिपदा	कृतिका	४	16	पुरुषोत्तम मास प्रारंभ
गुरुवार	द्वितीया	रोहिणी/मृगशिरा	४	17	चन्द्र दर्शन
शुक्रवार	तृतीया	आर्द्रा	५	18	सर्वार्थ सिद्धि योग
शुक्रवार	चतुर्थी	0	०	0	क्षय
शनिवार	पञ्चमी	पुनर्वसु	६	19	
रविवार	षष्ठी	पुष्य	७	20	सर्वार्थ सिद्धि व रवि पुष्पामृतयोग
सोमवार	सप्तमी	आश्लेषा	८	21	
मंगलवार	अष्टमी	मघा	९	22	
बुधवार	नवमी	पूर्वाफाल्गुनी	१०	23	
गुरुवार	दशमी	उत्तरा फाल्गुनी	११	24	गंगा दशहरा पर्व
शुक्रवार	एकादशी	हस्त	१२	25	कमला पुरुषोत्तम एकादशी
शनिवार	द्वादशी	चित्रा	१३	26	शनि प्रदोष व्रत
रविवार	त्रयोदशी	स्वाती	१४	27	
सोमवार	चतुर्दशी	विशाखा	१५	28	वीर सावरकर जयंती
मंगलवार	पूर्णिमा	अनुराधा	१६	29	पूर्णिमा सत्यनारायण व्रत
बुधवार	प्रतिपदा	ज्येष्ठ	१७	30	
गुरुवार	द्वितीया	मूल	१८	31	

श्री अष्टावक्र गीता (अष्टावक्र उवाच)

अहं सोऽहमयं नाहमिति क्षीणा विकल्पनाः।
सर्वमात्मेति निश्चित्य तूष्णीभूतस्य योगिनः॥९। १८

"सब आत्मा है, इस निश्चय को करके चुप हो गए योगी की ऐसी कल्पनाएँ, कि 'वह मैं हूँ' और 'यह मैं नहीं हूँ' समाप्त हो जाती हैं।"

न विक्षेपो न चैकाग्र्यं नातिबोधो न मूढ़ता।
न सुखं न च वा दुःखमुपशान्तस्य योगिनः॥१०॥ १८

"शांत हुए योगी के लिए न विक्षेप है, न एकाग्रता है, न बोध है और न मूढ़ता है, न सुख है और न दुःख है।"

स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर

क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विवादास्पद व्यक्तित्व रहे हैं। जहाँ बहुत से लोग उन्हें महान क्रांतिकारी व देशभक्त मानते हैं वहीं ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो उन्हें सांप्रदायिक मानते हैं सत्य जो भी तथ्य ये है कि हिन्दू राष्ट्र और हिंदुत्व की विचारधारा का प्रचार-प्रसार करने का श्रेय सावरकर को ही जाता है। आइये आज हम वीर सावरकर के जीवन के बारे में विस्तार से जानते हैं।

वीर सावरकर का प्रारम्भिक जीवन व शिक्षा-दीक्षा

वीर सावरकर का जन्म 28 मई, 1883 को नासिक जिले के भागूर ग्राम में हुआ था। उनके पिताजी का नाम दामोदर पन्त सावरकर था और उनकी माताजी का नाम राधाबाई था। वीर सावरकर एक देशभक्त क्रांतिकारी थे और वह हिन्दुत्व के हिमायती थे। उन्होंने अपनी पढ़ाई फर्ग्युसन कॉलेज, पुणे से पूरी की थी।

वीर सावरकर के दो भाई थे। जिनमें एक का नाम गणेश सावरकर और दूसरे का नाम नारायण सावरकर था। वह जब केवल नौ वर्ष के थे, तभी हैजे की महामारी के कारण उनकी माँ का देहांत हो गया और उसके करीब सात वर्ष बाद, वर्ष 1899 में प्लेग महामारी के चलते उनके पिताजी का भी स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद परिवार चलाने का कार्यभार बड़े भाई गणेश सावरकर ने संभाल लिया था।

1901 में वीर सावरकर का विवाह यमुनाबाई से हुआ। उनके दो पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रों का नाम प्रभाकर और विश्वास था पुत्री का नाम प्रभा चिपलूणकर था। यमुनाबाई के पिताजी ने वीर सावरकर की काफी आर्थिक मदद की और उनकी उच्च शिक्षा का खर्च भी वहन किया।

वीर सावरकर की विश्वविद्यालय की पढ़ाई का भार उनके ससुर ने उठाया था। उन्होंने फर्ग्युसन कॉलेज से बी. ए (कला क्षेत्र) की उपाधि प्राप्त की थी। वर्ष 1909 में वीर सावरकर ने लंदन जाकर वकालत की डिग्री हासिल की।

मित्र मेला

1897 की गर्मियों में महाराष्ट्र में प्लेग फैला हुआ था, जिसपर अंग्रेजी हुकूमत ध्यान नहीं दे रही थी। इस बात से क्षुब्ध होकर सावरकर ने अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्तिकारी गतिविधियाँ बढ़ाने के लिए 'मित्र मेला' का गठन किया।

अभिनव भारत संगठन

फर्ग्युसन कॉलेज में पढ़ते हुए उन्होंने छात्रों को एकत्रित किया और स्वतंत्रता सेनानियों की फौज खड़ी करने के लिए वर्ष 1904 में अभिनव भारत संगठन की स्थापना की। इस दौरान सावरकर ने कानून, इतिहास और दर्शनशास्त्र से सम्बंधित कई किताबें पढ़ीं और व्यायामशालाओं में जाकर प्रशिक्षण भी लिया। इन्ही दिनों वे लोकमान्य तिलक से भारत की आजादी के लिए विचार-विमर्श भी किया करते थे।

वर्ष 1905 बंगाल के विभाजन के विरोध में उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलायी थी। इस घटना से कॉलेज एडमिनिस्ट्रेशन नाराज हो गया और सावरकर को डिसमिस कर दिया गया। पर बाकी छात्रों के दबाव और तिलक के अनुरोध पर उन्हें एग्जाम देने दिया गया और वे अच्छे नम्बरों से पास हुए।

ग्रेजुएशन करने के बाद तिलक जी के अनुमोदन पर उन्हें श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्कॉलरशिप प्रदान की गयी और वे बार-ऐट-लॉ की पढ़ाई करने के लिए लन्दन रवाना हो गए। भारत में मौजूद ब्रिटिश अधिकारियों ने लन्दन में इन पर विशेष नजर रखने की सूचना भेजी।

लन्दन में वे इंडिया हाउस में रहने लगे। वहाँ उनकी मुलाकात लाला हरदयाल, मदनलाल ढींगरा आदि छात्रों से

हुई। सावरकर ने सभी को अभिनव भारत से जोड़ दिया।

अपने लन्दन प्रावास के दौरान ही वर्ष 1908 में वीर सावरकर ने एक किताब भी लिखी थी, जिसका नाम था- 'फर्स्ट वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस'। हालांकि ब्रिटिश अधिकारियों ने इसे जब्त कर लिया और किताब पब्लिश नहीं हो पायी।

इन्हीं दिनों सावरकर ने हर्बर्ट स्पेंसर, अगस्त कॉमटे, और माजिनी को पढ़ा ताकि वे अभिनव भारत का सिद्धांत गढ़ सकें।

बैरिस्टर की परीक्षा पास कर लेने के बावजूद वीर सावरकर ने ओथ लेने से इनकार कर दिया क्योंकि उन्होंने भारत पर ब्रिटिश आधिपत्य स्वीकार्य नहीं था।

सावरकर के अनुयायी व परम मित्रों में से एक मदन लाल ढींगरा भी थे।

जब सावरकर पेरिस में थे तभी अभिनव भारत के एक सदस्य अनंत कन्हारे ने जैक्सन नामक एक ब्रिटिश ऑफिसियल की हत्या कर दी। अंग्रेजों ने इन हत्याओं के पीछे सावरकर को दोषी माना और जब 13 मई, 1910 को वे ब्रिटेन आये तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

जेल में बंद सावरकर ने जब सुना कि उन्हें जहाज द्वारा रांस के दूसरे सबसे बड़े शहर मार्सेय होते हुए भारत ले जाया जायेगा तो उन्होंने फौरन फरार होने का एक प्लान बना लिया। उनका सोचना था कि रांस में शरण लेने से फ्रेंच सरकार उन्हें ब्रिटिश लॉ से बचा लेगी।

जब उनका जहाज मार्सेय के तट पर पहुँचने वाला था तभी उन्होंने टॉयलेट जाने का बहाना किया और पोर्टहोल के स्क्रू खोल कर समुद्र में कूद गए और तैरते हुए तट के किनारे पहुँच गए। पर दुर्भाग्यवश फ्रेंच पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और पुनः अंग्रेजों के हवाले कर दिया।

वीर सावरकर को उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों की वजह से ब्रिटिश सरकार ने एक नहीं दो-दो आजीवन कारावास यानि 50 साल की सजा दी थी। इस प्रकार की सजा एक ऐतिहासिक घटना थी। क्योंकि इससे पहले कभी किसी व्यक्ति को दोहरे आजीवन कारावास की सजा नहीं सुनाई गयी थी और सजा काटने के लिए जो जेल चुनी गयी थी वो थी अंडमान निकोबार आइलैंड की राजधानी में बनी हुई सेलुलर जेल। यह जेल काला पानी के नाम से कुख्यात थी।

जब सावरकर को जेल में लाया गया तब पहले से ही उनके कुछ साथी वहाँ मौजूद थे, जिनमे उनके बड़े भाई गणेश भी शामिल थे।

सेलुलर जेल में रखे गए कैदियों से खूब काम कराया जाता था। उन्हें भर पेट खाना भी नहीं दिया जाता था। नारियल छील कर उसका तेल निकालना, जंगलों से लकड़ियाँ काटना, तेल निकालने की चक्कियों में कोल्हू के बैल की तरह मजदूरी करना और पहाड़ी क्षेत्रों में दुर्गम जगहों पर हुकुम के मुताबिक काम करना, यह सब कठिन काम वीर सावरकर को सेलुलर जेल के अन्य कैदियों के साथ करने पड़ते थे।

इसके अलावा छोटी-छोटी गलतियों पर कैदियों की खूब पिटाई की जाती आर काल कोठरी में कई-कई दिन तक भूखे प्यासे रखा जाता था।

वीर सावरकर 4, जुलाई 1911 से ले कर 21 मई, 1921 तक पोर्ट ब्लेयर की सेलुलर जेल में रहे थे।

1920 में सरदार वल्लभभाई पटेल के बड़े भाई विठ्ठलभाई पटेल ने सावरकर को रिहा किये जाने की बात उठाई जिसे गाँधी जी और नेहरु जी ने भी समर्थन दिया। सावरकर ने खुद भी कुछ दया-याचिकाएं भेजीं और परिणामस्वरूप सावरकर को पहले सेलुलर जेल से पुणे की येरवडा जेल और फिर वेस्टर्न महाराष्ट्र की रत्नागिरी जेल में भेज दिया गया। रत्नागिरी जेल में रहते हुए ही वीर सावरकर ने 'हिंदुत्व' पर अपने विचार लिखे जिसे उनके समर्थकों ने चोरी-छिपे प्रकशित व प्रचारित किया।

इसके बाद 6 जनवरी 1924 को उन्हें जेल से इस शर्त के साथ रिहा कर दिया गया कि वे अगले 5 साल रत्नागिरी छोड़ कर कहीं नहीं जायेंगे और किसी राजनीतिक

शेष पृष्ठ 14 पर....

गंगा दशहरा

गंगा दशहरा हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को दशहरा कहते हैं। इसमें स्नान, दान, रूपात्मक व्रत होता है। स्कन्दपुराण में लिखा हुआ है कि ज्येष्ठ शुक्ला दशमी संवत्सरमुखी मानी गई है इसमें स्नान और दान तो विशेष करके करें। किसी भी नदी पर जाकर अर्घ्य (पूजादिक) एवं तिलोदक (तीर्थ प्राप्ति निमित्तक तर्पण) अवश्य करें।

भविष्य पुराण में लिखा हुआ है कि, जो मनुष्य इस दशहरा के दिन गंगा के पानी में खड़ा होकर दस बार इस स्तोत्र को पढ़ता है चाहे वो दरिद्र हो, चाहे असमर्थ हो वह भी प्रयत्नपूर्वक गंगा की पूजा कर उस फल को पाता है। यह दशहरा के दिन स्नान करने की विधि पूरी हुई। स्कंद पुराण का कहा हुआ दशहरा नाम का गंगा स्तोत्र और उसके पढ़ने की विधि-सब अवयवों से सुंदर तीन नेत्रों वाली चतुर्भुजी जिसके कि चारों भुज, रत्नकुंभ, श्वेतकमल, वरद और अभय से सुशोभित हैं, सफेद वस्त्र पहने हुई है।

मुक्त मणियों से विभूषित है, सौम्य है, अयुत चंद्रमाओं की प्रभा के सम सुख वाली है जिस पर चामर डुलाए जा रहे हैं, बाल श्वेत छत्र से भलीभाँति शोभित है, अच्छी तरह प्रसन्न है, वर के देने वाली है, निरंतर करुणार्द्रचित्त है, भूपृष्ठ को अमृत से प्लावित कर रही है, दिव्य गंध लगाए हुए है, त्रिलोकी से पूजित है, सब देवों से अधिष्ठित है, दिव्य रत्नों से विभूषित है, दिव्य ही माल्य और अनुलेपन है, ऐसी गंगा के पानी में ध्यान करके भक्तिपूर्व मंत्र से अर्चना करें। 'ॐ नमो भगवति हिलि हिलि मिलि मिलि गंगे माँ पावय पावय स्वाहा' यह गंगाजी का मंत्र है।

इसका अर्थ है कि हे भगवति गंगे! मुझे बार-बार मिल, पवित्र कर, पवित्र कर, इससे गंगाजी के लिए पंचोपचार और पुष्पांजलि समर्पण करें। इस प्रकार गंगा का ध्यान और पूजन करके गंगा के पानी में खड़े होकर ॐ अद्य इत्यादि से संकल्प करें कि ऐसे समय ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से लेकर दशमी तक रोज-रोज एक बढ़ाते हुए सब पापों को नष्ट करने के लिए गंगा स्तोत्र का जप करूँगा। पीछे स्तोत्र पढ़ना चाहिए। ईश्वर बोले कि आनंदरूपिणी आनंद के देने वाली गंगा के लिए बारंबार नमस्कार है।

दुनिया की सबसे पवित्र नदियों में एक है गंगा। गंगा के निर्मल जल पर लगातार हुए शोधों से भी गंगा विज्ञान की हर कसौटी पर भी खरी उतरी विज्ञान भी मानता है कि गंगाजल में किटाणुओं को मारने की क्षमता होती है जिस कारण इसका जल हमेशा पवित्र रहता है। यह सत्य भी विश्वव्यापी है कि गंगा नदी में एक डुबकी लगाने से सभी पाप धुल जाते हैं। हिन्दू धर्म में तो गंगा को देवी माँ का दर्जा दिया गया है। यह माना जाता है कि जब माँ गंगा का स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई तो वह ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि थी, तभी से इस तिथि को गंगा दशहरा के रूप में मनाया जाता है।

कहा जाता है कि जिस दिन माँ गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई उस दिन एक बहुत ही अनूठा और भाग्यशाली मुहूर्त था। उस दिन ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथी और वार बुधवार था, हस्त नक्षत्र, व्यतिपात योग, गर योग, आनंद योग, कन्या राशि में चंद्रमा और वृषभ में सूर्य। इस प्रकार दस शुभ योग उस दिन बन रहे थे। माना जाता है कि इन सभी दस शुभ योगों के प्रभाव से गंगा दशहरा के पर्व में जो भी व्यक्ति गंगा में स्नान करता है उसके ये दस प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं।

1. बिना आज्ञा या जबरन किसी की वस्तु लेना
2. हिंसा
3. पराई स्त्री के साथ समागम
4. कटुवचन का प्रयोग
5. असत्य वचन बोलना
6. किसी की शिकायत करना
7. असंबद्ध प्रलाप
8. दूसरें की संपत्ति हड़पना या हड़पने की इच्छा
9. दूसरें को हानि पहुँचाना या ऐसे इच्छा रखना
10. व्यर्थ बातो पर परिचर्चा

कहने का तात्पर्य है जिस किसी ने भी उपरोक्त पापकर्म किये हैं और जिसे अपने किये का पश्चाताप है और इससे मुक्ति पाना चाहता है तो उसे सच्चे मन से माँ

शेष पृष्ठ 26 पर....

CJI पर महाभियोग मामले में सुप्रीम कोर्ट में हुआ हाई वोल्टेज ड्रामा, कांग्रेस ने वापस ली याचिका

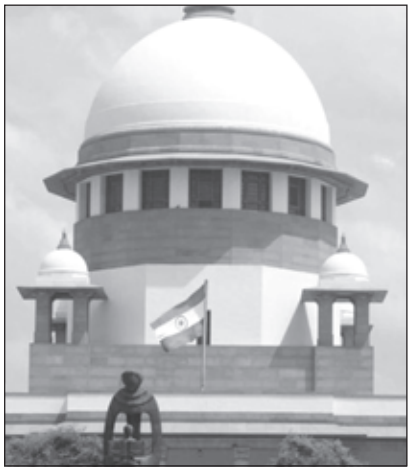

मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा के खिलाफ महाभियोग नोटिस अस्वीकार करने के आदेश को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में हाई वोल्टेज ड्रामा हुआ। याचिकाकर्ता कांग्रेस सांसदों की ओर से पेश वरिष्ठ वकील और कांग्रेस नेता कपिल सिब्बल ने सुनवाई के लिए पाँच न्यायाधीशों की पीठ गठित किए जाने पर सवाल उठाया। उन्होंने पीठ गठन का आदेश उपलब्ध किए जाने की मांग करते हुए कहा कि वह उस आदेश को कोर्ट में चुनौती देना चाहते हैं। जब मामले की सुनवाई कर रही पाँच न्यायाधीशों की संविधान पीठ सिब्बल की मांग पर राजी नहीं हुई, तो सिब्बल ने याचिका वापस ले ली।

कांग्रेस के दो सांसदों ने सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर राज्यसभा के सभापति और देश के उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू के सीजेआई दीपक मिश्रा के खिलाफ सांसदों द्वारा दिए गए महाभियोग नोटिस को अस्वीकार करने के आदेश को चुनौती दी थी।

चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा ने देर शाम पीठ और उसके पाँच जजों का चयन कर लिया था। इस पीठ में वो चार वरिष्ठ जज शामिल नहीं थे, जिन्होंने 12 प्रेस कांफ्रेंस कर चीफ जस्टिस मिश्रा पर अधिकारों के दुरुपयोग का आरोप लगाया था। संविधान पीठ में जस्टिस एके सीकरी, जस्टिस एसए बोबड़े, जस्टिस एमवी रमना, जस्टिस अरुण मिश्रा और जस्टिस आदर्श कुमार गोयल शामिल थे।

प्रताप सिंह बाजवा और अमी याज्ञनिक राज्यसभा से कांग्रेस सांसद हैं। इन्होंने अपनी याचिका में कोर्ट से कहा था कि उप राष्ट्रपति नायडू को अभियोग प्रस्ताव पर कार्यवाही शुरू करने का आदेश दिया जाए। याचिका में सभापति के आदेश को मनमाना व गैरकानूनी बताते हुए रद्द करने की मांग की गई थी। कांग्रेस सांसद और वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल व प्रशांत भूषण ने दूसरे नंबर के वरिष्ठतम न्यायाधीश जे. चेमलेश्वर की अदालत में याचिका का जिक्र करते हुए मामले को सुनवाई पर लगाने का आदेश मांगा था।

सिब्बल के बहस करने पर उठे सवाल

वकील आरपी लूथरा और अश्विनी कुमार उपाध्याय ने इस मामले में कपिल सिब्बल के बहस करने पर सवाल उठाए। लूथरा ने कहा कि कपिल सिब्बल ने महाभियोग नोटिस पर हस्ताक्षर किए हैं। इसलिए ये इस मामले में बहस नहीं कर सकते। उन्होंने इस बारे में बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष के बयान को भी कोट किया जिसमें कहा गया था कि महाभियोग प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने वाले सांसद कोर्ट में पेश होकर बहस नहीं कर सकते।

सिब्बल के चेहरे का रंग उड़ा

सिब्बल के बहस करने पर आपत्ति किए जाने के बाद उनके चेहरे का रंग उड़ गया। उन्होंने तत्काल कोर्ट से कहा कि अगर कोर्ट को उनके बहस करने पर एतराज है, तो वह इस बहस से अलग हो सकते हैं। हालांकि ये मामला महाभियोग का नहीं है, बल्कि महाभियोग नोटिस अस्वीकार करने के राज्यसभा सभापति के आदेश को चुनौती देने का है। सिब्बल ने कहा कि आरोपों की मेरिट पर कोई बहस नहीं करेंगे। इस पर पीठ ने सिब्बल से कहा कि हमने वकीलों का एतराज सुन लिया है। अब ये आप पर निर्भर करता है कि बहस करना चाहते हैं या नहीं। इसके बाद सिब्बल ने मामले पर बहस की और

शेष पृष्ठ 21 पर....

महाभियोग पर तमाशा

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ महाभियोग का नोटिस नामंजूर करने के राज्यसभा सभापति के फैसले के विरोध में दायर याचिका को कांग्रेसी सांसद एवं वकील कपिल सिब्बल ने जिस तरह वापस लिया उससे यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर वह चाहते क्या हैं? उनकी ओर से जिस आधार पर यह याचिका वापस ली गई उससे तो यही लगता है कि वह या तो इस मामले को तूल देकर कोई संकीर्ण राजनीतिक हित साधना चाहते हैं या फिर इस कोशिश में हैं कि उनकी मनपसन्द बेंच ही इस मामले की सुनवाइ करे? आम तौर पर किसी भी याचिकाकर्ता की पहली कोशिश यह होती है कि उसकी सुनवाइ जल्द से जल्द हो, लेकिन किन्ही अबूझ कारणों से कपिल सिब्बल यह जानने पर अड़े कि पाँच सदस्यीय संविधान पीठ का गठन किसन और किस आधार पर किया? यह जानने का औचित्य समझना इसलिए कठिन है, क्योंकि न तो सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश इस याचिका की सुनवाई करने वाली पीठ का हिस्सा थे और न ही वे चार वरिष्ठ न्यायाधीश जिन्होंने सार्वजनिक रूप से सामने आकर यह शिकायत की थी कि सुप्रीम कोर्ट में सब कुछ सही नहीं। न्याय और नैतिकता का तकाजा यही कहता था कि इस याचिका सुनवाई से मुख्य न्यायाधीश के साथ-साथ चार वरिष्ठ न्यायाधीश भी दूर रहें। ऐसी ही व्यवस्था की गई और सुप्रीम कोर्ट के छह से दस नंबर तक के पाँच शीर्ष न्यायाधीशों को यह मामला सौंपा गया। जैसे यह जरूरी था कि हितों के टकराव से बचने के लिए मुख्य न्यायाधीश इस मामले की सुनवाई से दूर रहें वैसे ही वे चार वरिष्ठ न्यायाधीश भी जिनकी शिकायत ही एक तरह से महाभियोग नोटिस का आधार बनी। आखिर इन सबसे कहीं भली तरह परिचित होने के बाद भी कपिल सिब्बल चार वरिष्ठ न्यायाधीशों में से एक से ही अपनी याचिका को सूचीबद्ध कराने पर क्यों अड़े?

मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ शिकायत का झंडा बुलंद करने वाले न्यायाधीश से ही उनसे संबंधित याचिका को सूचीबद्ध करने को कहना हितों के टकराव से भी कहीं अधिक गंभीर बात है। महाभियोग सरीखे गंभीर मामले में तमाशा करने का जैसा काम किया या उसकी मिसाल मिलना कठिन है। समझना कठिन है कि मुख्य न्यायधीश के खिलाफ महाभियोग लाने की अगुवाई करने वाले कपिल सिब्बल उक्त याचिका पर बहस करने कैसे पहुँच गए। क्या यह हितों का एक और टकराव नहीं? अर कपिल सिब्बल कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य के साथ ही एक बड़े वकील हैं तो इसका यह मतलब नहीं हो सकता कि उन्हें यह तय करने का अधिकार दे दिया जाए कि किस याचिका की सुनवाई कौन करे और कौन नहीं? उन्होंने याचिका वापस लेकर एक तरह से यह भी माहौल बनाया कि उन्हें सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायधीश के साथ-साथ छह से लेकर दस नंबर तक के पाँच शीर्ष न्यायाधीशों पर भी भरोसा नहीं? भले ही वह यह कह रहे हों कि उन्हें सुप्रीम कोर्ट की साख की परवाह है, लेकिन उनका आचरण ठीक इसके उलट है। इससे गंभीर बात और कोई नहीं हो सकती कि वरिष्ठ वकील ही सुप्रीम कोर्ट की प्रतिष्ठा से जानबूझ खिलवाड़ करते नजर आएं।

साभार : दैनिक जागरण

इंसान छोटा या बड़ा, जो भी कार्य हाथ में ले, उसे पूरी शक्ति के साथ करे। कोई भी कार्य शुरू करने से पूर्व गुण-दोष परख ले, किंतु एक बार हाथ में लिए गये कार्य को पूरा करके ही दम लें। ऐसा करने से व्यक्ति को सम्मान और यश की प्राप्ति होती है।

ये हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएँ, हमें अपने बलिदान और परिश्रम से जो आजादी मिले, हमारे अन्दर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए।

कीर्तन भक्ति का प्रताप

नाहं बसामि बैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

-धर्मनारायण शर्मा

भगवान् द्वारा ही यह उपर्युक्त घोषणा है। जहाँ भगवत् भजन-कीर्तन, कथा और भगवत् चर्चा होती है वही परमप्रभु का आसन लग जाता है। भक्तों के ही तो भगवान् हैं। जहाँ भक्तों द्वारा भगवत् भावधारा प्रवाहित होती है वहीं भगवत् सत्ता उपस्थित हो जाती है। भगवान् के इस कथन को ध्यान में रखकर भगवत् कीर्तन द्वारा भगवान् को बुलाया जा सकता है। भगवान् ने अनेक बार यह उद्घाटित किया है कि कोई मेरा प्रिय बनना चाहता है तो श्रीमद्भगवत् गीता के द्वादश अध्याय में वर्णित गुणों को धारण कर भगवत् भक्ति द्वारा मेरी शरणागति प्राप्त कर सकता है। उदाहरण के रूप में निम्न श्लोक द्वारा भगवत् गुणों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इन सभी गुणों से युक्त भक्त भगवान् का प्रिय बन जाता है। द्वादश अध्याय में भगवान् ने अपना प्रिय बनने की इच्छा वालों के लिए रहस्योद्घाटित कर दिया है। भगवान् कहते हैं :-

सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥

सब प्राणियों में द्वेषभाव से रहित और मित्रभाव वाला तथा दयालु भी और ममता रहित, अहंकार रहित, सुख-दुःख की प्राप्ति में सम, क्षमाशील, निरन्तर संतुष्ट, योगी, शरीर को वश में किये हुए, दृढ़ निश्चय वाला मुझमें अर्पित मन-बुद्धि वाला जो मेरा भक्त है, वह मुझे प्रिय है।

भक्त की भक्ति जप-तप, गान, कीर्तन-भजनों द्वारा निश्चित होती है। भक्त जब अपने इष्ट स्मरण में रत हो जाता है तो उससे देह का भान छूट जाता है। वह नृत्य-गान में तन्मय होकर भाव समाधि में स्थित हो जाता है। भक्ति की तन्मयता सती के सतीत्व की तरह आवेश युक्त होती है। भगवान् रामकृष्ण परमहंस जब भगवत् स्मरण में तन्मय होते थे उस समय वे योग की उच्चावस्था में पहुँच कर परमहंसिता को भी पार कर समाधिस्थ हो जाते थे। भक्ति का उन्माद पागलपन जैसा लगने लगता है। मीराबाई के लिए इसीलिए कहा जाता था-'मीरा भई री बावरी'

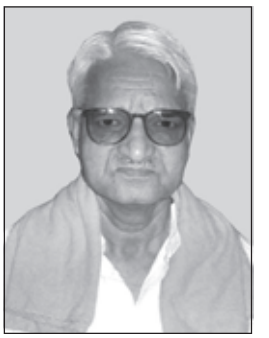

चैतन्य महाप्रभु ने भक्ति का प्रवाह कीर्तनों द्वारा निर्माण किया था। वे स्वयं कीर्तन की उच्चावस्था में पहुँच कर नृत्य में लवलीन हो जाते थे। कीर्तन का नृत्य किस प्रकार की उच्चावस्था को प्राप्त होता होगा यह चैतन्य महाप्रभु के कीर्तन से जाना जा सकता है। कहते हैं एक दिन कीर्तन की उच्चावस्था में वे जगन्नाथ में ही लीन हो गये। भक्ति की चरमावस्था द्वारा सब प्रकार का द्वैत मिटकर एकत्व निर्माण हो जाता है। मीरा व चैतन्य महाप्रभु ने यह एकत्व प्राप्त किया था।

ज्ञानेश्वर महाराज ने कीर्तन-भक्ति का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। 'कीर्तन के नट नृत्य में प्रायश्चित्तों के (अथवा प्रायःचित्तों के) सब व्यवसाय नष्ट हो जाते हैं। यम-दमादि योग-साधन अथवा तीर्थयात्रादि जीवों के पाप धो डालते हैं सही, पर कीर्तन रंग में रंगे हुए प्रेमियों में तो कोई पाप ही नहीं रह जाता। कीर्तन से संसार का दुःख दूर होता है। कीर्तन संसार के चारों ओर आनन्द की प्राचीर खड़ी कर देता है और सारा संसार महासुख से भर जाता है। कीर्तन से विश्व धवलित होता और बैकुण्ठ पृथ्वी पर उतर आता है।'

कीर्तन की महिमा कहते हुए तुकाराम ने कहा है 'कीर्तन बड़ी अच्छी चीज है। इससे शरीर हरिरूप हो जाता है। प्रेमछन्द से नाचो-डोलो। इससे देह भाव मिट जायेगा।' 'हरि कीर्तन, भगवान् और भक्त का त्रिवेणीसंगम होता है। कीर्तन में भगवान् के गुण गाये जाते हैं, नाम का जयघोष होता है और अनायास भक्तजनों का समागम होता है।' तुकाबा भगवान् से प्रार्थना करते हुए कहते हैं-'तेरा कीर्तन छोड़ मैं और कोई काम न करूँगा। लज्जा छोड़कर तेरे रंग में नाचूँगा।' यह है कीर्तन भक्ति का आनन्द। इस

आनन्द में अनेकों भक्तों ने अवगाहन किया है। तुलसीदास जी ने श्रीरामकथा का गान करके भक्ति का प्रवाह निर्माण किया। भक्ति की महिमा गाकर भक्त को भगवान् से जोड़ दिया।

मृत्यु का भय केवल भक्ति से ही भागता है। अनेक भक्तों ने यमदूतों को अर्द्धवृत्त कराया है। अभी नहीं कुछ समय बाद में चलेंगे। अभी तो मेरे ठाकुर को मैं स्नान-चंदन-अगर से पूजूँगा। जब पूजा पूर्ण होगी तभी चलेंगे। पुण्डलीक भक्त ने माता-पिता की सेवा को प्राथमिकता देते हुए बिठोबा को ईंट देकर उस पर खड़े रहने को कहा। वे विठोबा आज भी इसी प्रकार खड़े के खड़े हैं। किसी सती-साध्वी ने पति सेवा को प्राथमिकता देकर भगवान् को प्रतीक्षा करवाई है। भक्त के वशीभूत हैं भगवान् भी। भक्ति के परिणाम स्वरूप ही भगवान् रामकृष्ण परमहंस ने काली को वश में किया था और अपने भक्ति के प्रताप से ही नरेन्द्र को काली मैया का दर्शन करा दिया था। भक्ति जप-जाप, नाम-स्मरण, कीर्तन, भजन, गान, नृत्य की विधा में ढल जाती है तो भक्त को तन्मय करते हुए भगवान् के समीप ले जाती है। इसी भक्ति के प्रताप से संत तुलसीदास जी को चित्रकूट में श्रीराम दर्शन हुआ था। श्रीहनुमान जी ने यह करतब कर दिखाया था। उन्होंने यह दोहा बोला था-

चित्रकूट के घाट पर भई सन्तन की भीर,
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक करे रघुबीर॥

सन्त तुलसीदास ने इस वाणी को सुना तब आँख खोल कर अपने प्रभु के दर्शन किये। यह है भक्ति का प्रताप। अनेक भक्तों ने इस भक्ति व नाम-कीर्तन द्वारा अपने इष्ट को पाया है। इसी कारण भक्ति को सरलतम माना है। ज्ञान भी जब भक्ति में परिणित होता है तभी भगवत् प्राप्ति होती है। जब तक ज्ञान इस रूप में नहीं आता तब तक वह तर्क-वितर्क में अटका शास्त्र सृजन करता रहता है। परन्तु भगवत् प्राप्ति नहीं होती। गोपियाँ शास्त्र और शास्त्री नहीं थीं; परन्तु सब की सब भक्ति में पगी, कृष्ण रंग में रंगी, कृष्ण स्मरण में डूबी कृष्ण-कृष्ण करती-करती कृष्ण रूप हो गई थीं। उन्होंने उद्धव के ज्ञान-ध्यान को भी झाड़कर कहा उद्धव!

''उद्धो मन नाहीं दशबीस।
एक हुतो सो गयो स्याम संग अब को आराधे ईश॥''

यह है भक्त के भक्ति की अवस्था। यही अवस्था ईश दर्शन कराती है। ऐसे भक्तों के भगवान् पहरेदार बने रक्षक बन जाते हैं। अर्जुन के रोम-रोम से एक ही ध्वनि श्री नारद ने सुनी थी तब उनका संशय दूर हो गया था कि क्यों भगवान् कृष्ण अर्जुन को इतना चाहते हैं? ऐसे भक्तों के भगवान् भी खेवनहार बन जाते हैं। इसी कारण महाभारत के युद्ध में अर्जुन के रथ के सारथी बनकर उन्होंने रथ का संचालन ही नहीं तो सम्पूर्ण महाभारत का संचालन किया था। इस भारत में भक्तों का प्रवाह आया है। इन्हीं भक्तों ने भारत को मृत्युंजय बनाकर अनेक भीषण आघातों से बचा कर अद्यावत रखा है।

❑

अनमोल वचन

1. दूसरों की निन्दा करने वाला व्यक्ति नीच और अधम है। निन्दा करने में समय के अपव्यय के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगता, लेकिन इसका पाप उसे अवश्य भुगतना होता है।
2. आज के युग में जो व्यक्ति धनवान है, उसी का सम्मान और आदर होता है, भले ही वो व्यक्ति बुद्धि और व्यवहार से ठीक न हो। आज विद्वान व्यक्ति भी यदि निर्धन है, तो उपेक्षा का ही पात्र बनता है।
3. स्वार्थी और पानी व्यक्ति भी अपने निजी स्वार्थ हेतु कुछ भी बुरा कार्य करने में नहीं हिचकता, उसे किसी कार्य में दोष नही दिखता। अर्थात् व्यक्ति विवेकहीन होने पर अंधा हो जाता है।
4. लोभी को धन के लालच से, अभिलाषी को हाथ जोड़कर, भूखे को इच्छापूर्ति के द्वारा वश में किया जा सकता है और विद्वान को वास्तविक स्थिति की जानकारी देकर स्वयं के अनुकूल किया जा सकता है।

पत्रकारिता के दार्शनिक आयाम का आधार है 'आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन'

-लोकेन्द्र सिंह

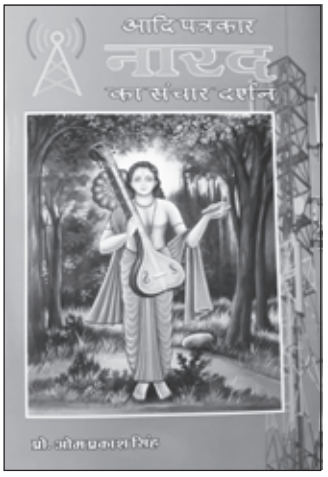

भारत में प्रत्येक विधा का कोई न कोई एक अधिष्ठाता है। प्रत्येक विधा का कल्याणकारी दर्शन है। पत्रकारिता या कहें संपूर्ण संचार विधा के संबंध में भी भारतीय दर्शन उपलब्ध है। देवर्षि नारद का संचार दर्शन हमारे आख्यानों में भरा पड़ा है। हाँ, यह और बात है कि वर्तमान में संचार के क्षेत्र में 'भारतीय दर्शन' की उपस्थिति दिखाई नहीं देती है। उसका एक कारण तो यह है कि लंबे समय तक संचार माध्यमों पर कम्युनिस्ट विचारधारा के लोगों को दबदबा रहा है। यह उजागर तथ्य है कि कम्युनिस्टों को 'भारतीय दर्शन' स्वीकार नहीं, वह प्रत्येक विधा को कार्ल मार्क्स या फिर विदेशी विचारकों के चश्मे से देखते हैं। अब यह स्थिति बदल रही है। देशभर में विभिन्न विषयों को भारतीय दृष्टिकोण से देखने की एक परंपरा विकसित हो रही है। उन लोगों को प्रोत्साहन मिल रहा है, जो ज्ञान-विज्ञान एवं संचार विषयों में भारतीय पहलू की पड़ताल कर रहे हैं। महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के मालवीय पत्रकारिता संस्थान के निदेशक प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने देवर्षि नारद को शोध का विषय बनाकर संचार के भारतीय दर्शन को सामने लाने का उल्लेखनीय कार्य किया है। देवर्षि नारद पर गहन अध्ययन के बाद संचार के भारतीय पक्ष पुस्तक 'आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन' के रूप में हमारे सामने आया है। यह पुस्तक निश्चित तौर पर भारतीय पत्रकारिता को एक दिशा देने का कार्य कर सकती है।

आज भारतीय पत्रकारिता की दिशा और दशा पर विद्वान चिंता व्यक्त कर रहे हैं। पत्रकारिता का अस्तित्व 'लोक कल्याण के भाव' पर ही टिका है। मिशन से प्रोफेशन में तब्दील हो चुकी पत्रकारिता में इसी भाव की कमी आती जा रही है। यह इसलिए हो रहा है, क्योंकि पत्रकारिता में दर्शन का अभाव है। पत्रकारिता के जो भी सिद्धांत हैं, वह एकपक्षीय हैं। वह एक पक्षीय इसलिए हैं, क्योंकि उन्हें हमने पश्चिम से लिया है। पश्चिम में एकात्म दर्शन नहीं है। वहाँ खंड-खंड में विचार किया जाता है। इसलिए आज समाचार माध्यमों के कर्ताधर्ता (मालिक और संपादक, दोनों) 'लोक' का नहीं, अपितु 'लोभ' का विचार करते हैं। पत्रकारिता सेवा से हट कर पूरी तरह व्यवसाय में बदल रही है। उसे इस स्थिति से बाहर निकालने के लिए पत्रकारिता को भारतीय दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। पत्रकारिता में संचार के भारतीय मूल्यों एवं सिद्धांतों की स्थापना करना आवश्यक है। देवर्षि नारद का संचार दर्शन भारतीय पत्रकारिता को लोक कल्याण की राह दिखा सकता है। इस संबंध में लेखक प्रो. ओम प्रकाश सिंह उचित ही कहते हैं- ''संचार और पत्रकारिता में प्रयोग है, उपयोग है, सिद्धांत है परन्तु दर्शन नहीं है। दर्शन के अभाव में संचार और पत्रकारिता की वर्तमान यात्रा जारी है। हमें वर्तमान में संचार एवं पत्रकारिता के दार्शनिक आयाम को तलाशना है, जिसमें 'आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन' एक आधार होगी। संचार एवं पत्रकारिता में भी दार्शनिक विकास के लिए यह जरूरी है कि संचार एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रारंभिक चिंतन एवं चिन्तक की खोज हो। इसी प्रक्रिया में भारत में जन-जन के परिचित सूचक अथवा संचारक देवर्षि नारद को मैंने अपने अध्ययन का आधार बनाया।''

देवर्षि नारद की संचार प्रक्रिया और सिद्धांतों का लेखक ने गहराई से अध्ययन किया है। अध्ययन की गहराई पुस्तक विभिन्न अध्यायों में स्पष्ट तौर पर दिखाई पड़ती है। पुस्तक में पाँच अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में देवर्षि नारद के जन्म की कथा को विस्तार से बताया गया है। साथ ही इस बात को स्थापित किया गया है कि नारद

प्रत्येक युग में उपस्थित रहे हैं और प्रत्येक युग में उन्होंने संचार की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी का निर्वहन लोक कल्याण की भावना के साथ किया है। द्वितीय अध्याय में लेखक ने प्रमाण के साथ यह बताया है कि नारद को हठपूर्वक 'आदि पत्रकार' या 'आदि संचारक' नहीं कहा जा रहा है, बल्कि प्राचीन ग्रंथों में भी उनको संचारक के रूप में देखा गया है। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में नारद के लिए 'पिशुन' शब्द का उपयोग किया गया है। पिशुन का अर्थ होता है- सूचना देने वाला, संकेत करने वाला, भेद बताने वाला, संचारक इत्यादि। इसके साथ ही लेखक ने इसी अध्याय में आदि संचारक नारद की रचनाओं का भी उल्लेख किया है, जिनमें संचार के सिद्धांत स्पष्टत: दिखाई देते हैं। तृतीय अध्याय में लेखक ने आदि पत्रकार नारद के संचार धर्म की व्याख्या की है। उन्होंने अनेक प्रसंगों के माध्यम से यह स्थापित किया है कि नारद के संचार का धर्म 'लोकहित' ही था। इन प्रसंगों के माध्यम से पत्रकार के गुणों एवं कर्तव्यों को भी बताने का प्रयास किया गया है। चतुर्थ अध्याय 'आदि पत्रकार नारद का आध्यात्मिक संचार' में पत्रकारिता के विविध पहलुओं की प्रसंग सहित व्याख्या की गई है। इनमें आध्यात्मिक संचार, धार्मिक रिपोर्टिंग, सांस्कृतिक पत्रकारिता, साहित्यिक पत्रकारिता, अनुसंधान, पर्यावरण, कृषि पत्रकारिता सहित प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार, तीर्थ वर्णन, पर्यटन, यात्रा वृत्तांत पत्रकारिता शामिल हैं। इसी प्रकार अंतिम अध्याय में संचार के विविध रूपों का वर्णन आया है। निश्चित ही लेखक की यह कृति नारद के विराट स्वरूप और उनके संचार के विस्तृत संसार को प्रकट करती है। यह पुस्तक पत्रकारिता एवं संचार के क्षेत्र की महत्त्वपूर्ण पुस्तक सिद्ध होगी। संचार के क्षेत्र से जुड़े सभी विद्वानों को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए और संचार को भारतीय दृष्टिकोण से न केवल देखना प्रारंभ करना चाहिए, बल्कि इस दिशा में और अधिक शोध कार्य करने चाहिए। अर्चना प्रकाशन, भोपाल ने इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन किया है।

पुस्तक : आदि पत्रकार नारद का संचार दर्शन
लेखक : प्रो. ओम प्रकाश सिंह
मूल्य : 250 रुपये (पेपरबैक)
पृष्ठ : 248
प्रकाशक : अर्चना प्रकाशन,
17, दीनदयाल परिसर, ई-2, महावीर नगर, भोपाल
दूरभाष - 0755-2420551

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।)

कल्याण प्राप्त करने का मार्ग

अमेरिका के एक प्रवासी परिवार में एक स्वामी जी महाराज ठहरे हुए थे। एक दिन वहाँ आकर एक सम्पन्न युवक ने उनसे पूछा-महाराज जी मैं अपने कार्यों के कारण दिनभर बहुत व्यस्त रहता हूँ। सुबह से शाम तक व्यापार के कामों से विभिन्न कार्यों में लगना पड़ता है। साधना उपासना के लिए बिल्कुल भी समय नहीं निकल पाता। मन में तनाव होने के कारण रात को नींद की गोलियाँ लेकर सोना पड़ता है कृपया मेरे कल्याण का कोई सरल उपाय बतायें।

स्वामीजी ने कहा-प्रात: शयन शैया त्यागने के बाद नित्य कर्म के बाद पाँच मिनट तक भगवान का ध्यान किया करो और कार्य पर जाने से पूर्व माता-पिता का आशीर्वाद लिया करो तथा रात को सोने से पूर्व भी भगवान की प्रार्थना का नियम बना लो। अपनी कमाई का कुछ भाग गरीबों-असहायों की सेवा में अर्पित करना मत भूलना। बस! इन सरल नियमों के पालन से तुम्हारा जीवन सफल हो जाएगा और रात को बिना गोली के ही गहरी नींद आने लगेगी।

युवक ने गुरूजी के बताये नियमों का पालन करना शुरू कर दिया। एक माह बाद जब वह पुन: उनके दर्शनों के लिए आया तो आनंद से बोला-महाराज जी! अब मैं अनुभव करने लगा हूँ कि माता-पिता के आशीर्वाद में अपार शक्ति होती है अब मैं रात्रि को बिस्तर पर पहुँचते ही भगवान की प्रार्थना के चमत्कार से गहरी निद्रा में लीन हो जाता हूँ माता-पिता के आशीर्वाद के बाद कार्य शुरू करने से सफलता कदम चूमती है और आत्मा को असीम शांति भी प्राप्त होती है।

ओ३म्

॥ इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागात् ॥

गुरुकुल प्रभात आश्रम में

प्रवेश-परीक्षा

प्राचीन वैदिक आर्ष-परम्परा के संवाहक **गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ,** उत्तर प्रदेश में नवीन प्रवेशार्थी छात्रों की प्रवेश-परीक्षा पूर्व वर्षों की भाँति इस वर्ष भी **26** जून से **30** जून **2018** तक सम्पन्न होगी। प्रवेशार्थी छात्र की अर्हता पञ्चम श्रेणी उत्तीर्ण, मेधावी, स्वस्थ, सुशील एवं आयु **10** वर्ष होनी चाहिए। प्रवेश परीक्षा लिखित एवं मौखिक दो चरणों में एक दिन में ही **(प्रातः 8:00-11:00 तथा सायं 2:00-5:00 बजे तक)** होगी। लिखित परीक्षा में **60%** अंक प्राप्त छात्र ही मौखिक परीक्षा के लिए चुना जायेगा।

विशेष जानकारी के लिए **आचार्य, गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला झाल, मेरठ** से सम्पर्क करें।

दूरभाष संख्या- 08006702551, 09719325677

सूचना- अभिभावक समय का विशेषरूप से ध्यान दें।

निवेदक :- प्रबन्धक, गुरुकुल प्रभात आश्रम,

टीकरी, भोला- झाल, मेरठ- 250501 (उ.प्र.)

....पृष्ठ 6 का शेष

गतिविधि में हिस्सा नहीं लेंगे।

पहली बार 'हिंदुत्व' शब्द प्रयोग करने का श्रेय वीर सावरकर को ही जाता है।

रिहा होने के कुछ दिनों बाद सावरकर ने 23 जनवरी 1924 को रत्नागिरी हिन्दू सभा का गठन किया जिसका उद्देश्य भारत की प्राचीन सभ्यता को बचाना और सामजिक कार्य करना था। उन्होंने हिंदी भाषा को देश भर में आम भाषा के रूप में अपनाने पर जोर दिया और हिन्दू धर्म में व्याप्त जाति भेद व छुआछूत को खत्म करने का आह्वान किया।

इन सामजिक कार्यों को करने के साथ-साथ वे पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित हिन्दू महासभा के सक्रिय सदस्य बन गए।

1937 में वीर सावरकर को हिन्दू महासभा का अध्यक्ष चुन लिया गया और वे 1943 तक इस पद पर बने रहे। उनकी अध्यक्षता में पार्टी ने हिन्दू राष्ट्र व अखंड भारत की विचारधारा को बढ़ावा दिया।

स्रोत्र: इंटरनेट

❑

इस दुनिया में असंभव कुछ भी नहीं। हम वो सब कर सकते है, जो हम सोच सकते है और हम वो सब सोच सकते है, जो आज तक हमने नहीं सोचा।

बीच रास्ते से लौटने का कोई फायदा नहीं क्योंकि लौटने पर आपको उतनी ही दूरी तय करनी पड़ेगी जितनी दूरी तय करने पर आप लक्ष्य तक पहुँच सकते है।

सफलता हमारा परिचय दुनिया को करवाती है और असफलता हमें दुनिया का परिचय करवाती है।

अयोध्या की परिक्रमा यात्रा

अयोध्या की यह परिक्रमा चैत्र पूर्णिमा से प्रारम्भ होती है। इस बार यह परिक्रमा 31 मार्च, 18 से प्रारम्भ होकर 21 अप्रैल, 18 को अयोध्या रामकोट की परिक्रमा एवं भंडारे के साथ पूर्ण हुई। परिक्रमा मार्ग 5 जिलों बस्ती, अम्बेडकर नगर, फैजाबाद, बाराबंकी एवं गोण्डा होकर गुजरती है। यह अयोध्या की सांस्कृतिक सीमा है। अयोध्या से उत्तर स्थित (मखभूमि) मखौडा मनोरमा नदी के किनारे स्थित है। जहाँ महाराजा दशरथ ने पुत्रेष्ठि यज्ञ किया था, वहाँ पूजन के पश्चात् परिक्रमा प्रारम्भ हुई।

31 मार्च, 18 को कारसेवकपुरम् से परिक्रमा यात्रा प्रारम्भ हुई। यात्रा को विश्व हिन्दू परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय महामंत्री मा. चम्पत राय जी ने केसरिया ध्वज दिखाकर रवाना किया, साथ में मा. पुरूषोत्तम नारायण सिंह एवं क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री अम्बरीष सिंह भी मौजूद रहे। रास्ते में मणिराम दास छावनी के महंत पूज्य नृत्य गोपाल दास जी का आशीर्वचन लेते हुए सरयू नदी में पूजन के पश्चात् मखभूमि के लिए प्रस्थान किया। 1 अप्रैल प्रातः मखौडा में पूजन के पश्चात् पदयात्रा प्रारभ्म हुई जो रामगढ़, रामरेखा, हनुमानबाग, श्रंगीऋषि, तमसा तट, सूर्य कुण्ड, सीता कुण्ड, आस्तिकन मंदिर, जनमेजय कुण्ड, अमानीगंज, रूदौली, पटरंगा, बेलखरा से नाव द्वारा सरयू पार कर गोण्डा जिले के देवीगंज, जम्मूघाट, राजापुर (तुलसीदास जन्मस्थान), पस्का, नरहरि दास कुटी, बाराह भगवान मंदिर, बाराही देवी, डिक्सिर, अष्टावक्र मुनि आश्रम, अमदही, महर्षि यमदग्नि आश्रम जमथा, कपिल मुनि आश्रम महंगूपुर, पहलवान वीर बाबा नवाबगंज, रेहली, सिकन्दरपुर होते हुए 20 अप्रैल सायंकाल अयोध्या पहुँची। 21 अप्रैल रामकोट परिक्रमा फिर दोपहर भण्डारे के साथ परिक्रमा पूर्ण हुई।

सम्पूर्ण परिक्रमा मार्ग में लगभग 450 लोगों ने सहभागिता की जिसमें 100 महिला, 150 संत एवं 200 लोगों ने भाग लिया, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखण्ड, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, छत्तीसगढ़ एवं नेपाल के तीन जिलों के 13 लोगों ने भाग लिया। यात्रा प्रारम्भ के 3 दिन साथ रहने के बाद झारखण्ड के 47 पद यात्रियों ने आगे की परिक्रमा बस से पूर्ण की, क्योंकि इसमें सरकारी कर्मचारी एवं बड़े-बुजुर्ग थे। यात्रा मार्ग में सभी पडावों पर स्थानीय जनता एवं कार्यकर्ताओं ने स्वागत, सत्कार फूल-माला, तोरण द्वार एवं डी.जे. आदि के साथ किया। रात्रि पडाव स्थल पर संतों का प्रवचन एवं रथ के माध्यम से रामायण सीरियल का प्रदर्शन होता रहा। परिक्रमा प्रतिदिन लगभग 15 किलोमीटर चलती थी यात्रा में 5 वाहन भी थे।

परिक्रमा यात्रा का बस्ती में हर्रैया विधायक अजय सिंह, गोसांईगंज भा0ज0पा0 विधायक इन्द्र प्रताप तिवारी खब्बू, बीकापुर विधायक शोभा सिंह, मिल्कीपुर विधायक बाबा गोरखनाथ, रूदौली विधायक राम चन्द्र यादव, दरियाबाद विधायक सतीश शर्मा, तरबगंज विधायक प्रेम नारायण पाण्डेय एवं मनकापुर विधायक एवं मंत्री मा. रमापति शास्त्री ने भी अपने-2 क्षेत्र में स्वागत किया। तरबगंज विधायक प्रेम नारायण पाण्डेय ने राँगी में सम्पूर्ण भोजन व्यवस्था एवं सभी परिक्रमार्थियों को अंग वस्त्र एवं मिष्ठान देकर स्वागत किया। मा. रमापति शास्त्री मंत्री ने भी सभी को जलपान, माला एवं दक्षिणा देकर स्वागत किया।

-सुरेन्द्र सिंह
84 कोसी परिक्रमा प्रमुख, अयोध्या
9415116347

❑

पतितों को ईश्वर के दर्शन उपलब्ध हों, क्योंकि ईश्वर पतित-पावन जो है। यही तो हमारे शास्त्रों का सार है। भगवद-दर्शन करने की अछूतों की माँग जिस व्यक्ति को बहुत-बड़ी दिखाई देती है, वास्तव में वह व्यक्ति स्वयं अछूत है और पतित भी, भले ही उसे चारों वेद कंठस्थ क्यों न हों।

-वीर सावरकर

''राष्ट्र की एकता और अखंडता'' के लिये ''जम्मू बचाओ कश्मीर बचाओ''

जम्मू-कश्मीर के कठुआ जिले के रसाना गाँव के एक मंदिर में विशेष षडयंत्र के अंतर्गत 17 जनवरी को एक नाबालिग 8 वर्षीय बालिका के शव को पाया जाना बताया है। इसी आधार पर वहाँ के प्रशासन ने कुछ राष्ट्रवादियों पर दोषारोपण करके उनको बंदी बनाया हैं। इस गाँव के अतिरिक्त कठुआ जिले की अधिकांश जनता इस प्रकार के तथाकथित मनगढंत व झूठ पर आधारित विवाद के कारण आक्रोशित व पीड़ित हो रही हैं। कुछ सूत्रों से यह भी ज्ञात हुआ है कि इस गाँव के कुछ राष्ट्रवादी परिवार भयभीत होकर वहाँ से पलायन करने को भी विवश हो गये हैं। कठुआ के देशभक्त लोगों ने इस हत्याकांड की निष्पक्षता व सत्यता के लिये देश की सर्वोच्च जाँच एजेंसी सीबीआई से जाँच करवाने की राज्य सरकार से मांग करी हैं। उन्होंने अपनी मांग मनवाने के लिये एक आंदोलन भी चला रखा हैं।

इस तथाकथित आरोपों के पीछे कही न कही एक ऐसे षड्यंत्र की साजिश समझ में आती है जिससे वहाँ पर म्यांमार से अवैध रूप से घुसपैठ करके आने वाले रोहिंग्या मुसलमानों का विरोध न हो पाये? क्योंकि जम्मू का क्षेत्र हिन्दू बहुल हैं इसलिये षड्यंत्रकारियों द्वारा यहाँ पर बांग्लादेशी घुसपैठियों को बसाने के अतिरिक्त पिछले लगभग 6-7 वर्षों से धीरे-धीरे रोहिंग्या मुसलमानों को भी बसाया जा रहा हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि जम्मू क्षेत्र की जनसंख्या के स्वरूप को परिवर्तित किये जाने की सुनियोजित योजना पर कार्य हो रहा है। इन घुसपैठियों के कारण वहाँ अनेक प्रकार के आपराधिक व आतंकी घटनाओं में वृद्धि हो रही है। इसीलिये जम्मू व कठुआ आदि की राष्ट्रवादी जनता ने इन रोहिंग्याओं को उनके क्षेत्रों से बाहर निकालने के लिये शासन पर दबाव बनाया हुआ है। अनेक आंदोलनों के उपरांत भी राज्य सरकार कोई सुनवायी नही कर रही है। इसलिये ऐसा प्रतीत हो रहा है कि इस क्षेत्र की जनता को पीड़ित करके रोहिंग्याओं को वहाँ सरलता से बसाने की योजना पर वहाँ का प्रशासन कार्य कर रहा है।

अत: राज्य सरकार की ऐसी योजनाओं के प्रति समस्त देशवासियों को जम्मू क्षेत्र की जनता के पक्ष को समझना होगा और कठुआ कांड की सीबीआई जाँच की मांग के लिये देशवयापी आंदोलन करने होंगे। आज सम्पूर्ण देशवासियों को अपनी लगभग 30 वर्ष पूर्व की गयी भयंकर भूल जिसमें 5 लाख कश्मीरी हिन्दू कश्मीर से मार-मार कर खदेड़े गये थे, की पुन:वर्ती से बचना होगा। परंतु यह भी स्मरण रहें कि कुछ वर्ष पूर्व जब हमारी अमरनाथ जी की धार्मिक यात्रा पर संकट आ रहा था तब भी जम्मू के लोगों द्वारा चलाये गये आन्दोलन को देश के अनेक भागों से भरपूर समर्थन मिला था और उस अभियान में सफल हुए थे। इसलिए जम्मू के निवासियों की रक्षार्थ हम सबको उनके इस आंदोलन में पुन: सहभागी बनना होगा। जम्मू-कश्मीर एक सीमांत प्रदेश है अत: राष्ट्रीय एकता व अखंडता के लिये यह हम सब का कर्तव्य भी हैं और दायित्व भी बनता हैं कि ऐसे षड्यंत्रकारियों का एकजुट होकर प्रभावशाली प्रतिरोध करें।

-विनोद कुमार सर्वोदय
गाजियाबाद

मिट्टी का मटका और परिवार की कीमत, सिर्फ बनाने वाले को ही पता होती है, तोड़ने वाले को नहीं।

संघर्ष इंसान को मजबूत बनाता है! फिर चाहे वो कितना भी कमजोर क्यो न हो।

जो मजिंलो को पाने की चाहत रखते। वो समंदरो पर भी पत्थरों के पुल बना देते है।

कभी मत सोचिये कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है, ऐसा सोचना सबसे बड़ा विधर्म है, अगर कोई पाप है, तो वो यही है। ये कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं।

सांस्कृतिक एकता की आध्यात्मिक यात्रा

तीर्थाटन परंपरा भारतीय का महत्त्वपूर्ण अंग है। यह ईश्वर से साक्षात् होकर बात करने और सर्वोच्च आध्यात्मिकता को अनुभव करने की यात्रा होती है। सभी तीर्थों में हिमालय की दुर्गम ऊँचाई पर स्थित अमरनाथ में भगवान शिव की पवित्र गुफा की यात्रा का विशेष महत्त्व है। इस यात्रा को सबसे पवित्र यात्राओं में से एक माना जाता है। यह मानव के अवचेतन में सोए हुए देवत्व को जगाने की यात्रा होती है, जिसे वह साक्षात् अनुभव करता है। इस गुफा में स्वामी विवेकानंद के अनुभव के बारे में सिस्टर निवेदिता ने लिखा है कि-स्वामीजी ने इतनी आध्यात्मिक ऊँचाई कभी भी अनुभव नहीं की थी। बाद में स्वयं स्वामी विवेकानंद ने कहा कि-मैंने इतना सुंदर और प्रोत्साहित करने वाला स्थान कभी नहीं देखा। अमरनाथ के अधिकतर यात्रियों के मन-मस्तिष्क पर ऐसा ही प्रभाव होता है। विश्व के संभवत: सबसे रोमांचक और दुर्गम मार्ग पर पैदल या घोड़े पर चलते हुए वैसे भी यात्रियों के मन में दैवीय भावनाओं का जन्म होता है। पवित्र गफुा में पहुँचकर यात्री के पावन शिवलिंग के दर्शन करते हैं और उस शक्ति को अनुभव करते हैं जो सर्व सत्य और सनातन है। यह पवित्र गुफा हिमालय की सबसे पवित्र चोटी पर स्थित है जो सनातन धर्म की मान्यताओं के अनुसार स्वयं ही पवित्रता और शक्ति का प्रतीक है। इस पवित्र पर्वत शिखर और भगवान शिव का आपस में बहुत निकट का संबंध है।

महाकवि कालिदास ने भी कहा है-हिमालय शिव की हँसी है। इस पवित्र गुफा तक सामान्यत: जून-जुलाई के माह में ही पहुँचा जा सकता है। इस समय गुफा के अंदर बर्फ का एक भव्य शिवलिंग अस्तित्व में होता है। बिल्कुल रहस्मय और चमत्कारिक रूप में गुफा के ऊपर से पानी की बूंदे गिरती हैं और धीरे-धीरे हिमलिंग का निर्माण हो जाता है। पूर्णिमा के दिन यह पूर्णरूप में होता है। कहते हैं कि उस दिन शिव ने अपनी पत्नी और हिमालय पुत्री पार्वती को जीवन का रहस्य बताया था। अमरत्व के भेद और अमरनाथ गुफा को लेकर कई मिथक कथाएँ प्रचलित हैं। एक कथा के अनुसार सदियों पूर्व माँ पार्वती ने शिवजी से पूछा कि कब और क्यों आपने अपने गले में नरमुण्ड़ माला पहननी शुरू की। शिवजी ने प्रत्युत्तर में कहा कि जब-जब तुम पुनर्जन्म लेती हो तब-तब में अपनी माला में एक मुण्ड़ जोड़ लेता हूँ। पार्वतीजी ने कहा-मेरा शरीर हर बार नष्ट होता है। मैं बार-बार मृत्यु को प्राप्त होती हूँ और बार-बार जन्म लेती हूँ लेकिन आप इस बंधन से मुक्त हैं। भोले शंकर ने कहा कि इसका भेद अमरकथा में है। पार्वतीजी ने भोले से अनुनय विनय की कि वह इस रहस्य से पर्दा उठाएं। शिव उनके अनुरोध को टालते रहे। बहुत अनुरोध पर भगवान शिव ने उन्हें अमर कथा सुनाने का निश्चय किया इसके लिए उन्होंने अमरनाथ गुफा को चुना जहाँ एक भी जीव न हो जो इस कथा को सुन सके। कथा सुनाने की तैयारी के क्रम में उन्होंने नन्दी को पहलगाम, जटाओं में शोभित चन्द्रकला को चन्दनवाड़ी, सर्पों को शेषनाग नदी के तट पर, पुत्र गणेश को महागुनाश पर्वत और पँचतत्वों (भू, जल, पवन, अग्नि व आकाश) को पंजतरणी में छोड़ दिया और माँ पार्वती को लेकर अमरनाथ गुफा पहुँचे। हिरण की खाल बिछाकर भगवान शिव ने समाधी लगाई और रूद्र नामक कालाग्नि प्रज्ज्वलित की। उन्होंने इस कालाग्नि को निर्दिष्ट किया कि गुफा के अंदर और समीप में चारों ओर जो भी जीवित वस्तुएँ हो उन्हें नष्ट कर दो। इसके बाद उन्होंने माँ पार्वती के समक्ष अमरकथा का विस्तृत विवरण कह सुनाया। अनेक उपायों के बाद भी इस अमर कथा को माँ पार्वती के सिवाय किसी और ने भी सुन लिया। भगवान शिव के आसन के नीचे एक अंडा सुरक्षित रह गया था जिसमें से निकले कबूतर के एक जोड़े ने इस कथा को सुन लिया और वे अमर हो गए। क्योंकि यह अंड़ा भगवान शिव की शरण में था इसलिए कालाग्नि भी उसे नष्ट नहीं कर पायी। अमरनाथ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को आज भी कबूतर के इस जोड़े के दर्शन होते है और भक्त इन्हें अमरत्व का प्रतीक मान नतमस्तक हो जाते है।

राज्यपाल शासन के समय अगस्त-सितम्बर 1986 में मैं स्वयं पैदल चलकर 14 हजार 500 फीट की ऊँचाई पर स्थित इस गुफा तक गया था, तब हम सभी लोगों ने कबूतरों का एक जोड़ा वहाँ देखा था। दूसरा कोई पक्षी उस समय वहाँ पर नहीं था। यह रहस्य है कि कैसे वहाँ बर्फ के आधार पर शिवलिंग का निर्माण हो जाता है और पूर्णिमा के दिन यह पूर्ण रूप में होता है और कबूतरों का जोड़ा कहाँ से आता है। लोगों का मानना है कि यह केवल संयोग नही हो सकता है। वर्तमान समय में यात्रा का आरंभ श्रीनगर के दशनामी अखाड़े से छड़ी मुबारक के साथ आरंभ होता है। यहाँ से यात्री प्रार्थना करके अपनी यात्रा प्रारंभ करते है। यात्री भी अपने हाथ में एक-एक छड़ी रखते हैं। यह भैतिक और धार्मिक दोनों आधार पर यात्रियों के लिए महत्त्वपूर्ण है। प्रार्थना के बाद यात्री जत्थे में पहलगाम की ओर प्रस्थान करते हैं। वहाँ से एक पतले से मार्ग पर चलते हुए लोग चन्दनवाड़ी के लिए प्रस्थान करते हैं, जिसके दोनों ओर बहुत हरियाली होती है और ऊँचे-ऊँचे पहाड़ होते हैं। चंदनवाड़ी के आगे का मार्ग बहुत दुर्गम होता है। यहाँ से लोग पिशू घाटी तक जाते हैं जो 3171 मीटर की ऊँचाई पर है। यह लोगों का ध्यान दिलाती है कि मोक्ष के मार्ग में बहुत संघर्ष और साहस की आवश्यकता होती है। इससे आगे चलकर जब यात्री शेषनाग पहुँचते हैं तो उन्हें स्वर्गिक अनुभव होता है। इस महान झील की सुंदरता यात्रियों का मन मोह लेने वाली है। शेषनाग लगभग साढ़े तीन हजार फीट की ऊँचाई पर है। शेषनाग उस मिथकीय समुद्र का प्रतीक है जिसमें भगवान विष्णु सात सिरों वाले नाग की शैया पर निवास करते हैं। यहाँ बर्फ के ठंठे पानी में स्नान करने के बाद यात्री सबसे कठिन चढ़ाई के लिए आगे बढ़ते हैं। यह चढ़ाई होती है 4350 मीटर ऊँचे महागुन की। यहाँ जंगली फूलों की भगमार दिखाई देती है यहाँ से यात्री पँचतरणी के लिए आगे बढ़ते हैं और वहाँ से पवित्र गुफा की ओर पहुँचकर एक अद्‌भूत प्रकार की सम्पूर्णता के भाव का अनुभव होता है और लोग अपनी सारी थकान भूल जाते हैं।

यद्यपि तापमान लगभन शून्य होता है फिर भी यात्री अपनी पूरी आस्था के साथ ठण्डे पानी में स्नान करते है। यात्रा को अधिक सुगम बनाने के लिए माता वैष्णों देवी श्राइन बोर्ड जैसा एक वैधानिक न्यास अमरनाथ यात्रा हेतु भी गठित किया गया है, जिसके अध्यक्ष जम्मू कश्मीर के राज्यपाल है। बोर्ड ने यात्रा को सरल व आराम दायक व भयमुक्त करने के लिए बहुत प्रयास किए हैं जिससे पारंपरिक रूट और बालटाल के रास्ते वहाँ तक पहुँचने के सामान्य मार्ग को ठीक किया गया और हैलीकॉप्टर सेवा भी आरंभ की गई। अब शीघ्रतापूर्वक बोर्ड और राज्य सरकार के मध्य उठे विवादों को जल्द ही निपटा लिया जाता है। हाई कोर्ट ने भी बोर्ड के द्वारा किए जा रहे कार्यों को मान्यता दी है। इस वर्ष भी दोनों मार्गों से चलकर लाखों लोग ने इस पवित्र गुफा तक पहुँचेंगे।

यह यात्रा लोगों की निजी आध्यात्मिक आवश्यकता और धार्मिक आस्था को पूरा करती है क्योंकि इस यात्रा में लोग महादेव के सबसे महान रूप मे दर्शन करते हैं। लेकिन इस यात्रा का महत्त्व केवल निजी मामले में नहीं है, अपितु यह देश की सांस्कृतिक एकता के संदर्भ से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह कश्मीर से कन्याकुमारी और काठियावाड़ से कामरूप तक भारत को रेखांकित करने वाली अवधारण के रूप में बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह ऐतिहासिक महत्त्व की यात्रा है और देश को एक करने वाली यात्रा के रूप में इसके महत्त्व को स्वीकार किया जाना चाहिए। जब कुछ लोग भारत के साथ कश्मीर की तुलना केवल अनुच्छेद 370 के संदर्भ में करते हैं तो मैं उनके अज्ञान पर आश्चर्य चकित होता हूँ। उन्हें नहीं पता है कि शेष भारत का कश्मीर के साथ संबंध कितना गहरा है। यह संबंध हजारों वर्षों से लोगों के मस्तिष्क, आत्मा में बसा हुआ है। यह संबंध भारत की भावनाओं में, जीवन व साहित्य में, दर्शन और कविता में विद्यमान है। इसी संबंध में सुब्रह्मण्यम भारती को यह कहने के लिए प्रेरित किया था कि कश्मीर भारतमाता के सिर का मुकुट है और कन्याकुमारी उनके चरणों का कमल और यह भी कहने के लिये प्रेरित किया था कि उसके करोड़ो चेहरे हैं लेकिन हृदय एक है।

लेखकः- जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल,
पूर्व केन्द्रीय मंत्री
तथा धर्मयात्रा महासंघ के संरक्षक है।

भारतीय शास्त्रों में भारत व उसका गुणगान

हिमालय की शोभा निराली है। यह भारत का मुकुटमणि है। हिमाच्छादित हिमालय भारत का सजग प्रहरी है। हिमालय कब से है नहीं मालूम; परन्तु भारत के शास्त्रों में इसका लालित्यपूर्ण एवं श्रद्धापूर्ण वर्ण प्राप्त होता है। विष्णपुराण भारत का उल्लेख समुद्र एवं हिमालय से ही कर रहा है-

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षं तद्भारत नाम भारती यत्र सन्तति॥ विष्णुपुराण।

विष्णुपुराण जैसे, भारत की सीमा का प्रतिपादन कर रहा है। समुद्र के उत्तर में तथा हिमालय के दक्षिण में स्थित यह देश भारतवर्ष कहलाता है। उसमें भारत की सन्तान भारती बसी हुई है।

हिमालय से दक्षिण समुद्र तक फैला भूखण्ड भारत कहलाता है। हिमालय से अर्थ निशेष हिमालय, सम्पूर्ण हिमालय की छोटी-बड़ी शाखा, उपशाखाओं से परिपूर्ण यह भूमिखण्ड भारम भूमि है। उत्तर में हिमालय की शाखाएँ चीन के भी कुछ भू-भाग को अपने परिवेश में लाती हैं पश्चिम में उपगणस्थान (अफगानिस्तान) को आवष्ठित करती हुई विस्तृत है। इसी हिमालय की शाखाओं को अनेक नाम प्राप्त हुए हैं। विभिन्न नामाभिधान धारण करने वाले ये शाखाएँ हिमवान ही है। अग्निपुराण भी भारत का निम्न प्रकार से वर्णन कर रहा है:-

क्षीरो दधेरूतरं यद्हिमाद्रेयचैव दक्षिणम्।
ज्ञेयं तद् भारत वर्ष सर्वकर्म फल पदम्॥ अग्निपुराण।

सागर के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में सब प्रकार के कर्म फलों को प्रदान करने वाला भारत स्थित है।

पुन: अग्निपुराण भारत का वर्णन करते हुए उसके विस्तार की ओर संकेत कर रहा है-

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्ष तद् भरातं नाम नव सहस्र विस्तृतम्॥ अग्निपुराण।

समुद्र से उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में नौ हजार योजन में फैला हुआ भारत वर्ष है।

इस प्रकार वायुपुराण भी भारत का वर्णन करने में पीछे नहीं है। यह पुराण भारत का वर्णन निम्न प्रकार से करता है-

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमवत् दक्षिणं च यत्।
वर्ष तद् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा॥ वायुपुराण।

वायुपुराण में भारत के विस्तार तथा लम्बाई का भी स्पष्ट उल्लेख है। इसके अनुसार गंगा के स्रोत से कन्याकुमारी तक इस देश की लम्बाई एक हजार योजन है-

योजनानां सहस्त्र द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरम्।
आयतो हि कुमारी क्याद् गंगा प्रमवाच्चय:॥

'कुलार्णवतंत्र' ने भी भारत एवं हिन्दुस्थान का सीमांकन निम्न प्रकार से किया है-

हिमालयं समारभ्य यावहिन्दुसरोवरम्।
हिन्दुस्थानमिति ख्यातमान्यन्ताक्षर योगत:॥ कुलार्णवतंत्र।

हिमालय से इन्दु सरोवर (कन्याकुमारी) नामों के मेल से हिन्दुस्थान नाम बना है।

भविष्यपुराण हिन्दुस्थान को सिन्धु के पश्चिम में स्थित भू-भाग द्वारा विख्यात करता है-

सिन्धु स्थानमिति ज्ञयं राष्ट्रमार्यस्यचोत्तमम्।
म्लेच्छस्थानं परं सिन्धों कृत: तेन महात्मनम्॥

वीर विनायक दामोदर सावरकर अपने निर्मित श्लोक द्वारा हिन्दू कौन को सिद्ध कर रहे है, परन्तु उससे भी भारत के परिवेश का दर्शन तो हो ही जाता है-

आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारत भूमिका।
पितृभि-पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरीति स्मृत:॥

समुद्र से सिन्धु नदी पर्यन्त अर्थात् वर्तमान में हिन्दुकुश पर्वत की शाखाओं तक फैला यह भारत है। यह भारतभूमि हिन्दुओं की पितृभूमि, पुण्यभूमि है। कुछ साहित्यकारों ने भी अपने ढंग से भारत को उकेरा है। भारतीय पुराणों में यह धरा विष्णुपत्नि है। विस्तृत भू माता की बेटी यह भारतीयों की भारतमाता है। इस भारत का वर्णन निम्न कार से भी प्राप्त होता है-

रत्नाकरा धौतपदां हिमालय किरीटिनीम्।
ब्रह्मराजर्षिरत्नाढ्यां वन्दे भारत मातरम्॥

हिमालय इस भारम माता का मुकुट है और रत्नाकर सागर इसके चरण धो रहा है, ब्रह्मर्षियों और राजर्षियों रूपी रत्नों से समृद्ध ऐसी भारत माता की मैं वन्दना करता हूँ।

पुनश्च विष्णुपुराण भारत के विस्तार को निम्न प्रकार

से उद्घाटित करते हुए कहता है-

नवयोजनसाहस्त्रों विस्तारोऽरय महामुने।
कर्मभूमिरियं स्वर्गमपवर्ग च गच्छताम।।

हे महामुने! इस (भारतवर्ष) का विस्तार नौ हजार योजन है। वह स्वर्ग अपवर्ग प्राप्त करने वालों की कर्मभूमि है।

हमारे महान् राष्ट्रकवि कालिदास ने हिमालय का वर्णन जिस प्रकार से किया है उसे देखकर तो लगता है कि भारत का विस्तार बड़ा ही विशाल था। वे तो कहते हैं हिमालय इस भूमि पर मानदण्ड अर्थात् रीड़ के समान स्थित है-

अस्त्युत्तस्यां दिशि देवतात्मा हिमालये नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोय निधी वगाह्य स्थितः पृथ्विया इव मानदण्डः॥

कुमार संभव, प्रथम सर्ग-1

उत्तर दिशा में देवातात्मा हिमालय नाम का पर्वतराज है, जिसकी भुजाएँ पूर्व और पश्चिम में समुद्रपर्यन्त फैली हुई हैं और जो पृथ्वी के मानदण्ड की तरह स्थित है।

हिमालय भारत के मध्य में होने का अर्थ है कि दक्षिण में भारत का विस्तार जितना है उतना ही भारत में भी विस्तृत; परन्तु आज यह दृश्य दिखता नहीं है।

भारत की राजनीति शास्त्र के मर्मज्ञ चाणक्य जिनका वचन प्रमाण हैख उन चाणक्य ने भी भारत के विस्तार को निम्न प्रकार से उकेरा है-

हिमवत्समुद्रान्तरमुदीचीनं योजनसहस्त्रपरिमाणाम्।

उत्तर में समुद्र से हिमालय पर्यन्त इस देश की लम्बाई एक सहस्त्र योजन है। इसका अर्थ है कि कवि कालिदास का वर्णन राजनीति-विशारद चाणक्य के वक्तव्य के अनुरूप है और हमारे लिए हमारी मातृभूमि की विशालता का इससे दिग्दर्शन होता है।

भारतवर्ष की विशेषताओं को बताते हुए अपने भाषण में डॉ. राधाकृष्णन् ने महाभारत का एक श्लोक उद्धृत किया था। हमारी विरासत पृष्ठ 34 जो कि इस प्रकार है-

यथा समुद्रो भगवान् यथा मेरूर्महागिरिः।
उभौ ख्यातौ रत्ननिधि तथा भारतमुच्यते॥

महाभारत आदि 56-17 पूना संस्करण

अर्थात् जैसे भगवान, समुद्र और हिमवान पर्वत दोनों ही रत्नों की खान है, वैसे भारत भी रत्नों से परिपूर्ण है।

एक समय में इस भारत भू को 'अजनाभवर्ष' भी कहा जाता था। इस्ततः इस रूप में पुराणों में इसका उल्लेख आता है। अथर्ववेद में भारत का उल्लेख भारत इस नाम से तो नहीं है; परन्तु समुद्र एवं हिमालय रूप से इस पावन भूखण्ड का उल्लेख मिलता है।

यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा। समुद्रे यस्यं रसाभिवाहः।
इमाश्च में प्रदिशो यस्यबाहू। कस्मैदेवाय हविषाविधेम॥

अथर्ववेद-12-1-12

अर्थात् हिमवान पर्वत जिसकी महिमा का बखान कर रहा है, नदियों सहित सागर जिसके यशोगान में मग्न है और बाहू सदृश्य दिशाएँ जिसकी कीति गाथा सुना रही हैं, उस परमप्रभु को हम अपना हविष्य समर्पित करें।

'मार्कण्डेय पुराण ने भारत वर्ष को नौ विभागों में विभाजित किया है। यह नौ विभाग समुद्रों से आवेष्ठित होने के कारण सम्पर्क सूत्र कम ही हैं। मुख्य रूप से भारतभूमि भी समुद्र से घिरी है। यह उत्तर से दक्षिण तक एक हजार योजन बड़ी है। इसके पूर्व में किरात और पश्चिम में श्वन रहते हैं। बीच में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों का निवास है।' मार्कण्डेय पुराण भारत में चार युगों का वर्णन भी करता है-

चत्वारि भारत वर्षे युगानि कवयोडब्रुवन।
कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चान्यत्रन क्वचित्॥

अध्याय-45

कवियों (मनीषियों) ने भारतवर्ष में कृत (सत्य) त्रेता, द्वापर तथा कलि इन चार युगों को बताया है। ये युग अन्यत्र कहीं नहीं होते है। यह भारतभूमि विश्व में श्रेष्ठतम भूमि है। यह कर्मभूमि है इसलिए देवता भी इस भूमि में जन्म लेने हेतु लालायित रहते हैं। इसी को विष्णुपुराण ने विविध प्रकार से प्रस्तुत किया। पुराणों द्वारा भारत की विस्तृत महिमा गान से इस लेख का कलेवर बढ़ जायेगा इसलिए सीमित मात्रा में ही महिमागान किया जा रहा है-

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने।
यतो हि कर्मभूरषा ह्यतोऽन्या भोगभूमयः॥

विष्णुपुराण 22

हे महामुने। इस जम्बूद्वीप में भी भारतवर्ष सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि पुण्यों का उदय होने पर ही कभी इस देश में मनुष्य जन्म प्राप्त होता है।

श्रीमद्भागवत् महापुराण में भी भारत का महिमागान हुआ है। भारतभूमि को पवित्रता और कर्मभूमि रूप विशेषता के कारण देवता भी इस भूमि का गान निम्न प्रकार से कर रहे हैं-

एतदेव हि देवा गायन्ति
अहो अमीषा किमकारि शोभनं
प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः
यैर्जन्म लब्धनृषु भारताजिरे। मुकुन्दसेवौपथिकं सहादिनः॥

अध्याय 21, पंचम स्कन्ध

देवता भी भारतवर्ष में उत्पन्न हुए मनुष्यों की इस प्रकार महिमा गाते हैं-अहा! जिन जीवों ने भारतवर्ष में भगवान की सेवा के योग्य मनुष्य जन्म प्राप्त किया है। उन्होंने ऐसा क्या पुण्य किया है? अथवा इन पर स्वयं श्री हरि ही प्रसन्न हो गए हैं? इस परम सौभाग्य के लिए तो निरन्तर हम भी तरसते रहते हैं।

मर्यादा पुरूषोत्तम प्रभु श्रीरामचन्द्र जी भी 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' कहकर इस भारत माता को स्वर्ग से बढ़कर बताया है। यह भूमि विष्णुपत्नि है यह मानकर भारत भक्त प्रातः धरती पर पैर रखते हुए क्षमावाणी में कहता है-

समुद्रवसने देवि पर्वतस्तनमण्डले
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे।

इस प्रकार देवता, ऋषि, योगी यहाँ तक की अवतार पुरूष भी इस भारत भूमि, भारत माता को सर्वश्रेष्ठ माँ मानकर इसकी महिमा का गान कर रहे हैं। इतना ही नहीं जब कभी निशाचरी वृत्तियों के कारण यह भूमि त्रस्त हुई है तो कभी अवतार, कभी तीर्थंकर, कभी तथागत रूप में तो कभी संत, गुरू, योगी, दण्डी स्वामी रूप में इस भूमि पर जन्म लेकर दुष्टों का दलन कर धर्मस्थापना करते हुए इस भूमि की पावनता को पुनः-पुनः प्रस्थापित किया है। ❑

.....पृष्ठ 8 का शेष

कोर्ट ने करीब एक घंटे इस मामले की सुनवाई की।

राज्यसभा सभापति की ओर से पेश हुए अटॉर्नी जनरल

वैसे तो इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने पक्षकारों को औपचारिक नोटिस जारी नहीं किया था, लेकिन फिर भी राज्यसभा सभापति की ओर से यचिका का विरोध करने के लिए अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल कोर्ट में पेश हुए, जबकि केंद्र सरकार की ओर से एडिशनल सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता पेश हुए।

अटॉर्नी जनरल ने याचिका की सुनवाई पर उठाई आपत्ति

अटॉर्नी जनरल केके वेणुगोपाल ने कांग्रेस के दो सांसदों की ओर से दाखिल याचिका का विरोध करते हुए कहा कि ये याचिका सुनवाई योग्य नहीं है। उन्होंने कहा कि सात राजनैतिक दलों के 64 सांसदों के हस्ताक्षर किए गए महाभियोग नोटिस को राज्यसभा सभापति ने तार्किक आधारों पर अस्वीकार किया और उसका आदेश पारित किया। उन्होंने कहा कि उस आदेश को राजनीतिक दल स्वीकार भी कर सकते थे और अस्वीकार भी। अगर अस्वीकार करते तो कोर्ट में चुनौती दी जाती। लेकिन नियमों के मुताबिक, कम से कम 50 सांसदों के इस पर हस्ताक्षर होने चाहिए थे। लेकिन इस याचिका में तो सिर्फ एक पार्टी के सिर्फ दो सांसदों के हस्ताक्षर हैं।

मालूम हो कि कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों के 64 सांसदों ने प्रधान न्यायाधीश दीपक मिश्रा पर कदाचार के आरोप लगाते हुए उन्हें पद से हटाने के लिए राज्यसभा सभापति वेंकैया नायडू को महाभियोग नोटिस दिया था। लेकिन सभापति ने गत 23 अप्रैल को नोटिस अस्वीकार कर दिया था।

साभार : दैनिक जागरण

मुझे सत्य का पालन करना पसंद है। बल्कि, मैंने औरों को उनके अपने भले के लिए सत्य से प्रेम करने और मिथ्या को त्यागने के लिए राजी करने को अपना कर्तव्य बना लिया है। अतः अधर्म का अंत मेरे जीवन का उद्देश्य है।

-दयानन्द सरस्वती

भगवान सदाशिव के विविध अवतार

सन्दर्भ-शिवपुराण

भगवान् सदाशिवका लीला-विलास ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों में विराजमान है। लीलाभिनय के लिये प्रभु जब इस जगत् की सृष्टि करते हैं तो अन्तर्यामीरूप से स्वयं भी इसमें प्रविष्ट हो जाते हैं-व्याप्त हो जाते हैं-'तत्सृष्टा तदेवानुप्रविशत्' और जब आवश्यकता समझते हैं तो स्वयं भी व्यक्तरूप से प्रकट हो जाते हैं। वेदों में भगवान् शिव की महिमा और उनकी करूणा का विशेष गान हुआ है। रूद्र, शिव, मृड, भव आदि ये सभी उन्हीं के नाम हैं। उनका घोर तथा अघोर-दो रूपों में विशेष वर्णन आया है। भगवान् शिव की संहारलीला की मूर्ति घोर एवं रक्षण तथा पालन-पोषण की मूर्ति अघोर कहलाती है। वेदो में जहाँ एक रूद्र की चर्चा है, वहीं 'असंख्यातरूद्र' पद से अनन्तानन्त रूद्रों का निर्वचन किया गया है। एकादश रूद्र तो प्रसिद्ध हैं ही, ऐसे ही भगवान् शिव सृष्टि के मूलतत्व लिंग के रूप में प्रकट हैं और पूजित होते हैं। द्वादश ज्योतिर्लिंग, बाणलिंग, स्वयम्भूलिंग आदि भगवान् शिव के लिंगरूप में उनके प्राकट्य के द्योतक हैं। ऐसे ही अष्टमूर्तियों के रूप में भी उनकी उपासना होती है। सद्योजात, वामदेव, तत्पुरूष आदि उनके पंच स्वरूप प्राप्त होते हैं। पुराणें में तो भक्तों के कल्याण के लिये भगवान् शिव के विभिन्न रूपों में अवतरण का वर्णन प्राप्त होता है। महाकाल, भैरव, यक्ष दुर्वासा, हनुमान्, पिप्पलाद, हंस आदि लीलावतारों की कथाएँ अत्यन्त कल्याणकारिणी हैं। उनका अर्धनारीश्वर तथा हरिहर के रूप में अवतरण विश्व को शिक्षा देने के लिये ही हुआ। ऐसे ही प्रणव के रूप में उनका ही अवतरण होता है। मृत्युंजय, दक्षिणामूर्ति, नटराज, भिक्षुक, महाकाल, पंचमुख, नीलकण्ठ, पशुपति, त्रयम्बक तथा योगेश्वरावतार आदि अनेक नाम-रूपों में प्रकट होकर भगवान् ने विविध लीलाएँ की हैं, जो भक्तों के लिये अतीव मंगलदायिनी हैं।

महादेव का नन्दीश्वरावतार

जो परमानन्दमय हैं, जिनकी लीलाएँ अनन्त हैं, जो ईश्वरों के भी ईश्वर, सर्वव्यापक, महान्, गौरी के प्रियतम तथा कार्तिकेय और विघ्नराज गणेश को उत्पन्न करने वाले हैं, उन आदिदेव शंकर की मैं वन्दना करता हूँ।'

प्राचीन काल में एक बार सनत्कुमारजी ने नन्दीश्वरजी से पूछा कि हे नन्दीश्वर! आप महादेव के अंश से कैसे उत्पन्न हुए तथा आपने शिवत्व कैसे प्राप्त किया? यह सब मैं सुनना चाहता हूँ, आप कहिये:-

नन्दीश्वर बोले- हे सनत्कुमार! शिलाद नाम के एक ऋषि थे। पितरों के उद्धार की इच्छा से उन्होंने इन्द्र के उद्देश्य से बहुत समय तक कठोर तप किया। तप से संतुष्ट होकर इन्द्र उनको वर देने को गये। इन्द्र ने शिलाद से कहा- मैं प्रसन्न हूँ, तुम वर माँगो। तब इन्द्र को प्रणामकर आदरपूर्वक स्तोत्रों से स्तुतिकर शिलाद हाथ जोड़कर बोले-हे देवेश! आप प्रसन्न हों तो मुझे मृत्युहीन आयोनिज पुत्र की प्राप्ति हो इन्द्र बोले-हे मने! मैं तुमको मृत्युहीन अयोनिज पुत्र नहीं दे सकता; क्योंकि विष्णुभगवान् से ब्रह्मा तक सब मृत्यु वाले हैं और की तो बात ही क्या है! यदि भगवान् शिव प्रसन्न हो जायँ तो वह तुम्हारे लिये मृत्युहीन अयोनिज पुत्र प्रदान कर सकते हैं, अत: आप शिवजी को प्रसन्न करें। इतना कहकर इन्द्र अपने लोक को चले गयें।

इन्द्र के जाने के बाद शिलाद ने दिव्य सहस्रवर्ष तक महादेवजी की आराधना की। उनकी आराधना से प्रसन्न होकर भगवान् शिव प्रकट हुए तथा शिलाद से कहा-हे शिलाद! मैं तुम्हें वर देने आया हूँ। भगवान् शिव के ध्यान में मग्न और समाधि में लीन शिलादमुनि ने शिव की बाणी को नहीं सुना। तब शिव ने उन मुनि का हाथ से स्पर्श किया, जिससे उनकी समाधि छूट गयी और अपने नेत्रों के सम्मुख अपने आराध्य उमा सहित भगवान् शम्भु को देखकर वे मुनि आन्दपूर्वक उनके चरणों में गिर पड़े। बड़े हर्ष से गद्गद्वाणी में वे शिवजी की स्तुति करने लगे तब देवेश भगवान् शिवजी ने शिलाद से कहा कि हे तपोधन! मैं तुम्हें वर देने आया हूँ। शिवजी के ऐसे वचन सुनकर शिलाद बोले-हे महेश्वर! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो आप मुझको अपने समान मृत्युहीन अयोनिज पुत्र प्रदान करें।

शिवजी बोले-हे विप्र! मैं स्वयं ही तुम्हारे यहाँ नन्दी नामक अयोनिज पुत्र रूप से प्रकट होऊँगा। हे मुने! तुम मुझ लोकत्रयी के पिता के भी पिता होने का सौभाग्य प्राप्त करोगे। इस प्रकार शिलाद को वर देकर शिव पार्वती सहित अन्तर्धान हो गये। शिलादमुनि ने अपने आश्रम पर आकर यह सारा वृत्तान्त अन्य मुनियों से कहा तो सभी मुनि अत्यन्त प्रसन्न हुए।

हे सनत्कुमार! कुछ समय बीतने पर एक दिन शिलाद यज्ञ करने के निमित्त यज्ञक्षेत्र को जोत रहे थे। मैं उसी समय उन शिव की आज्ञा से उनका पुत्ररूप होकर प्रलयाग्नि के समान देदीप्यामान रूप में प्रकट हुआ। उस समय देवताओं ने फूल बरसाये तथा ऋषिगण भी चारों तरफ से पुष्पवृष्टि करने लगे। हे मुने! उस समय मेरा स्वरूप प्रलयकाल के सूर्य और अग्नि के समान प्रकाशित तथा त्रिनेत्र, चतुर्भुज और जटामुकुटधारी था। साथ ही वह त्रिशूल आदि शस्त्रों को धारण किये हुए था। मेरा ऐसा स्वरूप देखकर मेरे पिता ने मुझ प्रणाम किया और बोले-हे सुरेश्वर! तुमने मुझे महान् आनन्द दिया है, इस कारण तुम्हारा नाम 'नन्दी' हुआ। तदनन्तर मेरे पिता मुझे अपनी पर्णकुटी में ले गये। पर्णकुटी में पहुँचकर मैंने अपना वह रूप त्यागकर मनुष्य शरीर धारण कर लिया।

हे सनत्कुमार! मुझ पर अत्यधिक स्नेह करने वाले उन शालंकायन के पुत्र शिलाद ने मेरे सम्पूर्ण जात कर्म आदि संस्कार किये। पाँच वर्ष की अवस्था में ही मेरे पिता ने मुझे सांगोपांग वेदों को और शास्त्रों को पढ़ाया। सातवें वर्ष में मित्रवरूण संज्ञक दो मुनि शिवजी की आज्ञा से मुझे देखने को आये, तब मेरे पिता से सत्कार को प्राप्त होकर वे मुनि अच्छी प्रकार बैठे और मुझे बारम्बार देखकर वे महात्मा बोले कि हे तात! सम्पूर्ण शास्त्रों में पारगामी ऐसा बालक हमनें नहीं देखा, परंतु तुम्हारा पुत्र नंदी थोड़ी अवस्था वाला है। इसकी आयु एक वर्ष की ही और होगी। उन ब्राह्मणों के ऐसा कहने पर मेरे पिता शिलाद उच्च स्वर में रोने लगे। मैंने अपने पिता को रोते हुए देखकर कहा-हे पिता! आप क्यों रोते हैं, यह मैं तत्त्वपूर्वक जानना चाहता हूँ? पिता बोले हे पुत्र! मैं तुम्हारी अल्पमृत्यु के दु:ख से दुखी हूँ। मैंने कहा-हे पिता! देवता, दानव, यमराज, काल मथा मनुष्य भी मुझे मारें तो भी मेरी अल्पमृत्यु नहीं होगी, इस कारण से आप दुखी मत होइये, यह मैं आपसे सत्य कहता हूँ, आपकी शपथ खाता हूँ। पिता बोले-हे पुत्र! तुम्हारी अल्पमृत्यु को कौन दूर करेगा? तब मैंने कहा-हे तात! मैं तप से अथवा विद्या से मृत्यु को दूर न करुँगा, केवल महादेवजी के भजन से मैं इस मृत्यु को जीतूँगा, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। नन्दीश्वर बोले-हे मुने! इस प्रकार कहकर पिता के चरणों में सिर से प्रणाम कर और उनकी प्रदक्षिणा करके मैं श्रेष्ठ वन को चला गया।

नन्दीश्वर बोले-हे मुने! वन में जाकर मैं एकान्त स्थल में स्थित होकर अति कठिन और श्रेष्ठ मुनियों के लिए भी दुष्कर तप करने लगा। मैं पँचमुख सदाशिव के परम् ध्यान में मग्न हो पवित्र नदी के उत्तर भाग में एकाग्रचित्त से सावधान हो रुद्रमंत्र जपने लगा। तब प्रसन्न होकर सदाशिव पार्वती सहित प्रकट होकर बोले-हे शिलाद नन्दन! तुम्हारे तप से मैं सन्तुष्ट हूँ, तुम अभिष्ट वर माँगो। सामने शिवपार्वती को देखकर अपने सिर को उनके चरणों में झुकाकर मैं उनकी स्तुती करने लगा। तब उन परमेश ने दोंनो हाथों से मुझे स्पर्श किया तथा बोले-हे वत्स, हे महाप्रज्ञ! तुम्हें मृत्यु से भय कहाँ? उन दोंनो ब्राह्मणों को तो मेंने ही भेजा था, तुम मेरे ही समान हो, उसमें कुछ संशय नहीं है। तुम पिता और सुहृज्जनों सहित अजर, अमर, दु:ख रहित, अविनाशी, अक्षय और मेरे प्रिय रहोगे। इस प्रकार कहकर उन्होनें अपनी कमलों से बनी शिरोमाला उतारकर शीघ्र मेरे कण्ठ में ड़ाल दी। हे मुने! उस सुन्दर माला को कण्ठ में पहनते ही तीन नेत्र, दस भुजाओं वाला मानों में दूसरा शिव ही हो गया। परमेश्वर ने कहा और क्या श्रेष्ठ वर दूँ? इतना कहकर वृषभध्वज ने अपनी जटाओं से हार के समान निर्मल जल ग्रहण कर 'नदी हो' ऐसा कहकर उसको मेरे ऊपर छिड़का। उस जल से पाँच शुभ नदियाँ:-जटोदका, त्रिस्त्रोता, वृषध्वनि, स्वर्णोदका और जम्बूनदी उत्पन्न होकर बहने लगीं। वह पंचनद नामक परम पवित्र शिव का पृष्ठदेश जपेश्वर के समीप वर्तमान है। शिवजी

शेष पृष्ठ 26 पर....

न्याय के देव-शनिदेव

-बजरंग प्रसाद रजक

जीव द्वारा कृत कर्मों के आधार पर उसको यथानुसार फल प्रदान करने वाले देव है शनिदेव। वह सद्कर्म करने वालों जहाँ लाभ प्रदान करते हैं वहीं दुष्कर्मी/अधर्मी जीवों को दंडित भी करते हैं। धार्मिक ग्रंथों व ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार शनिदेव न्याय के देवता हैं ये मद्धिम गति से चलते हैं। शनिदेव का जन्म ज्येष्ठ मास के कृष्णपक्ष की अमावस्या को हुआ था। स्कन्दपुराण के अनुसार सूर्य भगवान का विवाह दक्ष कन्या संज्ञा से हुआ था जो उनके तेज के सम्मुख अधिक समय तक नही ठहर पाती थीं। क्रमांतर से उनकी तीन संतानें हुई जिनमें से वैवस्वत मनु सबसे बड़े हैं, यम और यमुना जुड़वा थे। सूर्य की भीष्ण ऊष्मा को सहन करने की शक्ति प्राप्त करने की इच्छा से सूर्य पत्नी संज्ञा ने तपस्या करने का निश्चय किया और जाने से पूर्व अपनी छाया को सूर्य के पास छोड़ा और स्वयं गुप्त रूप से तपस्या करने के लिए चली गईं। उनकी अनुपस्थिति में छाया ही सूर्य के साथ रहने लगी और उन्होंने तीन संतानों अष्टम मनु, शनि और पुत्री भद्रा को जन्म को शनिदेव इनमें से मध्यम थे।

शनि का वर्ण श्याम क्यों

शिव भक्त छाया ने शनिदेव के जन्म से पूर्व भगवान शिव की इतनी तपस्या की कि उन्हें अपने खाने-पीने का भी ध्यान नहीं रहता था। उन्होंने अपने आप को तप की अग्नि में इतना तपाया की उनके गर्भ में पल रहे शिशु पर भी उनके कृत तप का प्रभाव पड़ गया और इस प्रकार से गर्भ में भी शनिदेव का रंग श्याम वर्ण का हो गया।

कलियुग और शनिदेव

शनिदेव के गुरू स्वयं महाकाल शिव हैं। कालभैरव, हनुमानजी और बालाजी इनके प्रिय मित्र हैं। फलित ज्योतिष के अनुसार शनि को अशुभ/कष्टकारी ग्रह/देव माना जाता है और नवग्रहों में क्रमांतर से इनका स्थान सातवां है। गुरू, शुक्र, राहू और बुद्ध शनि के मित्र ग्रह हैं और वहीं वृषभ, मिथुन, कन्या और तुला इनकी मित्र राशि हैं। इनकी स्वयं की प्रिय राशि मकर तथा कुंभ हैं। तुला शनि की जहाँ उच्च राशि है वहीं मेष अधम राशि है। शनिदेव का प्रिय नक्षत्र पुष्य-अनुराधा तथा उत्तराभाद्रपद है। ऐसी मान्यता है कि किसी भी एक राशि में शनिदेव 30 मास की अवधि तक रहते हैं। इनको स्वभाव से एकांत, गम्भीर, दूरदर्शी, त्यागी-तपस्वी, न्यायकारी एवम् स्पष्टभाषी माना जाता है। इनके अधिष्ठाता देव प्रजापति ब्रह्माजी हैं और प्रत्यधिदेव यम हैं।

शनिदेव का क्षेत्र

शनिदेव अपनी मित्र जाति के जातकों पर सदैव कृपा बनाए रखते हैं। ऐसे जातक यदि लोहा, इस्पात उद्योग, पैट्रोलियम-खनिज, मशीनरी, चमड़ा, कोयला, ट्रांसपोर्ट, यातायात, मिल-फैक्ट्री अथवा स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य करते हैं तो उन्हें अधिक भौतिक लाभ प्राप्त होता है। हमारे जीवन में जन्म से मृत्यु पर्यन्त शनिदेव का प्रभाव बना ही रहता है फिर वह जातक के लिए कष्टकारी हो या फिर लाभकारी शनिदेव किसी न किसी प्रकार हमें प्रभावित करते ही रहते हैं।

शनिदेव को प्रसन्न कैसे किया जाए

आने वाली शनिजयंती पर इनका शुभाशिर्वाद प्राप्त करने हेतु प्रात:काल सूर्योदय से पूर्व तेल मालिश करके स्नान करें। काले रंग की लोहे की चौकी पर काला वस्त्र बिछाकर शनिदेव का विधिवत पूजन करें अथवा मंदिर में जाकर शनिदेव को काला वस्त्र, काजल अर्पित करें क्योंकि शनिदेव को काला रंग अतिप्रिय जो है। सरसों के तेल का दीपक जलाएँ और नीले-काले पुष्पों से इनका पूजन करें तथा प्रसाद के रूप में नारियल के साथ अन्य फल भी चढ़ाएँ। शनि चालिसा का पाठ करें और शनिमन्त्र का सच्चे हृदय से जाप अवश्य करे:-

ॐ शं शनैश्चराय नमः
सूर्यपुत्रे दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः
मंदचार प्रसन्नात्मा पीड़ां हरतु में शनिः
नीलांजन समाभासं रवि पुत्रं यमाग्रजं

शेष पृष्ठ 25 पर....

लोकतंत्र सेनानियों ने व्यवस्था परिवर्तन पर दिया जोर
कहा-लोकनायक का स्वप्न साकार नहीं हुआ

मथुरा। लोकतंत्र रक्षक सेनानी कल्याण समिति की मासिक बैठक का आयोजन श्रीकृष्ण-जन्मस्थान के निकट स्थित धर्मशाला में संपन्न हुआ। बैठक में लोकतंत्र रक्षक सेनानियों के आवेदन निस्तारण में स्थानीय स्तर पर हो रही लापरवाही का मुद्दा लोकतंत्र सेनानियों ने उठाया तथा बताया कि जिलाधिकारी व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कार्यालय स्तर पर बरती जा रही लापरवाही के चलते संबंधित जाँच आख्यायें 12 से 18 माह में भी उपलब्ध नहीं हो पाने से राज्य सरकार द्वारा सम्मान प्राप्त लोकतंत्र सेनानियों को अत्यधिक कठिनाई हो रही है व सम्मान राशि से वंचित रहना पड़ रहा है। समिति के संगठन मंत्री चौ. नेपाल सिंह ने बताया कि लोकतंत्र सेनानी सम्मान अधिनियम-2016 में प्रावधान के बावजूद मृत लोकतंत्र सेनानी की पत्नियों को जाँच के नाम पर महीनों तक अनावश्यक परेशान कर उनका उत्पीड़न किया जा रहा है। उक्त संदर्भ में प्रकाश डालते हुये समिति के जिला अध्यक्ष विजय बहादुर सिंह ने बताया कि भाजपा नीत प्रदेश सरकार का ब्यूरोकेसी पर कोई नियंत्रण नहीं है, जिसके कारण अधिकारी वर्ग अधीनस्थों से कार्य लेने में असमर्थ प्रतीत हो रहे हैं। परिणामस्वरूप प्रदेश की जनता को सुशासन देने का संकल्प कोरा आश्वासन मात्र होकर रह गया है।

श्रीसिंह ने उपस्थित लोकतंत्र रक्षकों से लोकतंत्र को और अधिक मजबूत करने व नई पीढ़ी को लोकतंत्र का महत्त्व बताने की आवश्यकता पर बल देते हुये एक जुट होकर परिस्थितियों का सामना करने का आवाहन किया। समिति के जिला महामंत्री गिर्राजकिशोर अग्रवाल ने सेनानियों से घर-घर जाकर भेंट करने की संपर्क योजना के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की। इस अवसर पर अनौड़ा से यशपाल सिंह, हाथरस से सुरेश गुप्ता, बनी सिंह, पानीगाँव से आचार्य देवेन्द्र चैतन्य, लोहवन से रूपकिशोर शर्मा, नसीटी से बच्चू सिंह, गढ़ी मनसुख से नेपाल सिंह, गढ़ी बालकिशन से गिर्राजकिशोर तिवारी, ऐदलगढ़ी से शिवलहरी जी, गिडोह से भूपाल सिंह, बल्देव से केशव कुमार चौहान व सुभाषचन्द्र गुप्ता, दीनदयाल धाम से मदनमोहन उपाध्याय व मथुरा से दीपेन्द्र चतुर्वेदी, मान सिंह आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। बैठक की अध्यक्षता विजय बहादुर सिंह ने संचालन गिर्राजकिशोर अग्रवाल ने किया।

-गिर्राजकिशोर अग्रवाल
महामंत्री

❑

.....पृष्ठ 24 का शेष

छाया मार्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्
प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः
ॐ शं शनैश्चराय नमः
ध्वजिनी धामिनी चैव कंकाली कलहप्रिया,
कण्टकी कलही चाउथ तुरंगी महिषी अजा,
ॐ शं शनैश्चराय नमः
पिंगलो बभु कृष्णौ रौद्रान्तको यमः,
सौरि शनैश्चरा मन्द पिप्लादेन संस्थितः,
ॐ शं शनैश्चराय नमः॥

शनि जयंती के अवसर पर गाय, कौवे और काले कुत्ते को तेल लगाकर रोटी अथवा कोई भी खाद्य वस्तु जरूर खिलायें। वृद्धों और जरूरतमंदों की सेवा और सहायता अवश्य करें। उन्हें उनके स्वादानुसार वस्तुएं खिलाएँ। इस दिन कुष्ठ रोगियों की भी सहायता अवश्य करें तथा नेत्रहीनों को भी खाद्य वस्तुएं दान करें। उड़द की दाल से बनी वस्तुओं का दान करने से शनिदेव बहुत प्रसन्न होते हैं। काली उड़द, लोहे से बने सामान, तेल से बनी वस्तुओं का भोग लगायें और पीपल के वृक्ष के नीचे तेल का दीपक जलाएँ तथा साथ ही इनके प्रिय सखा वीर हनुमानजी का भी पूजन अवश्य करें तथा अपने आसपास के जरूरतमन्दों को शनिदेव की प्रिय वस्तुओं का दान यथा सामर्थ्य अवश्य करें।

साभार:धर्मप्रवाह

....पृष्ठ 7 का शेष

गंगा में डूबकी अवश्य लगानी चाहिये। यदि आप माँ गंगा तक नहीं जा सकते हैं तो स्वच्छ जल में थोड़ा गंगा जल मिलाकर माँ गंगा का स्मरण कर उससे भी स्नान कर सकते हैं।

इस दिन यदि संभव हो तो गंगा मैया के दर्शन कर उसे पवित्र जल में स्नान करें अन्यथा स्वच्छ जल में ही माँ गंगा को स्मरण करते हुए स्नान करें यदि गंगाजल हो तो थोड़ा उसे भी पानी में मिला लें। स्नानादि के पश्चात माँ गंगा की प्रतिमा की पूजा करें। इनके साथ राजा भागीरथ और हिमालय देव की भी पूजा-अर्चना करनी चाहिए। गंगा पूजा के समय प्रभु शिव की आराधना विशेष रूप से करनी चाहिए क्योंकि भगवान शिव ने ही गंगा जी के वेग को अपनी जटाओं पर धारण किया। पुराणों के अनुसार राजा भागीरथ ने माँ गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने के लिए बहुत तपस्या की थी। भागीरथ के ताप से प्रसन्न होकर माँ गंगा ने भागीरथ की प्रार्थना स्वीकार की किन्तु गंगा मैया ने भागीरथ से कहा - 'पृथ्वी पर अवतरण के समय मेरे वेग को रोकने वाला कोई चाहिए अन्यथा मैं धरातल को फाड़ कर रसातल में चली जाऊँगी और ऐसे में पृथ्वीवासी अपने पाप कैसे धो पाएँगे।

राजा भागीरथ ने माँ गंगा की बात सुनकर प्रभु शिव को प्रसन्न करने के लिए तपस्या की। भागीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर प्रभु शिव ने गंगा माँ को अपने जटाओं में धारण किया। पृथ्वी पर अवतरण से पूर्व माँ गंगा ब्रह्मदेव के कमंडल में विराजमान थी अत: गंगा मैया पृथ्वी पर स्वर्ग की पवित्रता साथ लेकर आई थी।

इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं को माँ गंगा की पूजा-अर्चना के साथ दान-पुण्य भी करना चाहिए। सत्तू, मटका और हाथ का पंखा दान करने से दुगुने फल की प्राप्ति होती है।

'नमो भगवते दशपापहराये गंगाये नारायण्ये रेवत्ये शिवाये दक्षाये अमृताये विश्वरुपिण्ये नंदिन्ये ते नमो नम:'

हे भगवती, दस पाप हरने वाली गंगा, नारायणी, रेवती, शिव, दक्षा, अमृता, विश्वरूपिणी, नंदनी को नमन।।

स्रोत : इंटरनेट

.....पृष्ठ 23 का शेष

पार्वतीजी से बोले कि मैं नन्दी को गणेश्वरपद में अभिषिक्त करता हूँ, तुम्हारी इसमें क्या सम्मति है? पार्वतीजी बोलीं-हे देवेश! यह शिलादपुत्र नन्दी आज से मेरा महाप्रिय पुत्र हुआ।

तदनन्तर शिवजी ने अपने सभी गणों को बुलाकर कहा कि यह नन्दीश्वर मेरा पुत्र, सब गणों का अधिपति तथा प्रियगणों में मुख्य हुआ, सभी को मेरे, इस वचन का पालन करना चाहिये। तुम सब प्रीतिपूर्वक नन्दी को स्नान कराओ और आज से यह नन्दी तुम सबका स्वामी हुआ। शिवजी के ऐसा कहने पर सम्पूर्ण गणपति 'बहुत अच्छा' कहकर सब अभिषेक की सामग्री ले आये। तदनन्तर इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवता तथा नारायण, सम्पूर्ण मुनि प्रसन्न हो सब लोकों से आये। शिव के नियोग से ब्रह्माजी ने सावधान हो नन्दी का अभिषेक किया, तब विष्णु ने फिर इन्द्र ने इसके पश्चात् लोकपालों ने अभिषेक किया। तब सभी ने नन्दीश्वर जी की स्तुति की।

नन्दीश्वर ने कहा-हे विप्र! इस प्रकार गणाध्यक्षपद पर अभिषिक्त होने के उपरान्त मुझ नन्दी ने ब्रह्माजी की आज्ञा से सुयशा नामवाली मरूत की परम मनोहर कन्या से विवाह किया। विवाह के समय जब मैं उस रूपवती सुन्दरी सुयशा के साथ मनोहर सिंहासन पर बैठा तब महालक्ष्मी ने मुझे मुकुट से सजाया, देवी ने अपने कण्ठ का दिव्य हार मुझे दिया। श्वेत वृषभ, हाथी तथा सिंह की ध्वजा, सुवर्ण का हार इत्यादि वस्तुएँ मुझे मिलीं। विवाह के पश्चात् मैंने ब्रह्माजी, विष्णुजी के चरणों में नमस्कार किया, तभी शिवजी ने मुझ सपत्नीक देख परम प्रीति से कहा-हे सत्पुत्र! तुम पति और यह सुयशा तुम्हारी पत्नी है। मैं तुमको वही वर दूँ, जो तुम्हारे मन में है। तुम मेरे सदा प्रिय होगे; तुम अजेय, महाबली होकर पूजनीय होगे। जहाँ मैं रहूँगा वहाँ तुम होगे, जहाँ तुम होगे वहाँ मैं रहूँगा। इस प्रकार कहकर शिवजी उमासहित कैलास को चले गये। नन्दीश्वर बोले-हे सनत्कुमार! जिस प्रकार मैंने शिवत्व प्राप्त किया, वह कथा मैंने आपको सुना दी।

साभार:धर्मप्रवाह

❑